इस्लामी अक़ाइद

→ ज़ेरे सरपरस्ती ←

हज़रत मुफ्ती अहमद साहिब खानपूरी

दामत बरकातुहुम

सरपरस्ते जामिया उद्‌गांव व शैखुल हदीस

जामिया इस्लामिया तालीमुद्दीन डाभेल(गुजरात)

→ ब इहतिमाम ←

मौलाना अहमदुल्लाह साहिब इराणी

हफिज़हुल्लाह

मोहतमिम,

जामिया खैरुल उलूम असादाबाद, उदगांव.

जामिया खैरुल उलूम, असादाबाद, उदगांव.

गट नं. १०९९, शिरोळ रोड, ता. शिरोळ, ज़ि. कोल्हापूर. (महाराष्ट्र)

दारुल इक़ामा(हॉस्टेल) का जारी तामीर काम

आज जिस दौर से हम गुज़र रहे हैं इस दौर में मुसलमानों के लिये दो पनाह गाहें हैं, एक दीनी मदारिस, दूसरे तबलीग़ी काम,मदारिस जो दीन के क़िले हैं, और दीन की बक़ा इल्मे दीन के बक़ा से ही हो सकती है, और अगर यह मदारिस बाक़ी न रहे और मुसलमानों की क़ुव्वत व शौकत बाक़ी भी हो तो क़ाबिले एअतिना नहीं। (तलख़ीस अज़ दारुल उलूम देवबंद और मदारिसे इस्लामिया)

मदारिसे अरबिया दीनी तालीम के तहफ़्फ़ुज़, किताब व सुन्नत की इशाअत और मुस्लिम मुआशरे की इस्लाह व हिफ़ाज़त के लिये यह इस्लामी गुरूकुल तामीर किये गये हैं के इन से दीन के सच्चे व मुख़्लिस ख़ादिम और इस्लाम के जांबाज़ व जुर्रतमंद सिपाही तयार किये जायें, जामिया ख़ैरुल उलूम उदगांव भी उन्ही मदारिसे इस्लामिया अरबिया की एक सुनेहरी कडी है,जहां मेहमानाने रसूल स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़ुरआनी और नबवी तालीमात व अख़्लाक़ी तर्बीयत से आरास्ता किया जाता है,उन्ही मेहमानाने रसूल स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ियाम के लिये जामिया में दारुल इक़ामा की तामीर का काम जारी है, जिस का तक़रीबन दो करोड रूपये का ख़र्च है,अबतक उस में चालीस लाख रूपये तक़रीबन ख़र्च हुये हैं और अभी काम बाक़ी है, लिहाज़ा आप हज़रात अपने लिये, अपने वालिदैन, रिश्तेदारों के ईसाले सवाब के लिये इस में हिस्सा ले कर आख़िरत का सामान तयार फ़र्मायें।

फ़क़त वस्सलाम

मोहतमिमे जामिया ख़ैरुल उलूम उदगांव

इस्लामी अक़ाइद्

ज़ेरे सरपरस्ती

हज़रत अक़्दस **मौलाना मुफ्ती अहमद साहिब खानपूरी** दामत बरकातुहुम
सरपरस्ते जामिया उद्गांव व शैखुल हदीस जामिया इस्लामिया तालीमुद्दीन डाभेल(गुजरात)

ज़ेरे इहतिमाम

मौलाना अहमदुल्लाह साहिब इराणी
इब्ने हज़रत मौलाना असअदुल्लाह साहिब इराणी

जामिया खैरुल उलूम, असादाबाद, उदगांव.
कोल्हापूर महाराष्ट्र

तफ्सीलात

किताब का नाम : इस्लामी अक़ाइद

कम्पोज़ींग : मौलाना नासिरसाहिब व मौलाना अशफाकसाहिब

नज़रेसानी : मुफ्तियाने इज़ान दारुलइफ्ता वल इर्शाद
जामिया खैरुल उलूम उदगांव.

ब इहतिमाम : मौलाना अहमदुल्लाहसाहिब इराणी
मोहतमिम जामिया खैरुल उलूम उदगांव

पब्लिश तारीख : २० शाबान १४३९ हि. मुताबिक ७ मई २०१८ इ.

ताअदाद : चार हज़ार

नाशिर : शोबये नशर व इशाअत जामिया खैरुल उलुम, उदगांव.

Bank Details

Jamiya Khairul Uloom
Bank of Baroda, Branch Udgaon
A/c. No. 14490100004410
IFSC Code : BARB0UDGAON

Jamiya Khairul Uloom
IDBI Bank, Branch Jaisingpur
A/c. No. 1822102000000037
IFSC Code : IBKL0001822

80G Number
F.S.Ko/A.A-II/Technology-II(80G)/19/3(A)/2014-15/859.dt-17/07/2014

PAN Number
AAATJ7717P

फहेरिस्त

जामिया की सालाना रिपोर्ट व मुख़्तसर तआरुफ़

जामिया ख़ैरुल उलूम असअदाबाद,उदगांव अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम और उस की नुसरत पर तक़रीबन ४९/ साल से इशाअते सुन्नत,तालीमे दीन,दावत व तब्लीग़ और तज़्किये नुफ़ूस की ख़िदमात ब हुस्न व ख़ूबी अंजाम दे रहा है ,अल्लाह तआला इस की ख़िदमात को क़बूल फ़र्माये, मज़ीद तरक़्क़ियात अता फ़र्माये और इस के मेयारे तालीम व तर्बीयत को बुलंद से बुलंदतर फ़र्माये। आमीन

जामिया के तालीमी शोबे:

अलहम्दुलिल्लाह जामिया में इस वक़्त दरजाते नाज़रए कुरआने करीम की पांच क्लासें,हिफ़्ज़ की छे क्लासें हैं जिन में इब्तिदाही से तजवीद का लाज़िमन एहतिमाम किया जाता है,नीज़ दरजाते इल्मियत में दर्जए उर्दू दीनियात से दौरए हदीस शरीफ़ तक की मुकम्मल तालीम जारी है,जामिया से सात सालों में ३८/ उलमाए किराम,शुरू से अब तक ५२३/ हुफ़्फ़ाज़े किराम फ़ारिग़ हो चुके हैं,जो दीनी ख़िदमात में मसरूफ़ हैं,अल्लाह तआला उन की ख़िदमात को क़बूल फ़र्माये। आमीन

इस वक़्त जामिया में २९०/ तलबए किराम ज़ेरे तालीम हैं,जो कुरआनी उलूम और नबवी अख़लाक़ से आरास्ता हो रहे हैं,इन तमाम तलबा के खाने पीने,रहने सहने,और दवाई वग़ैरा का मुकम्मल ख़र्च जामिया ही बर्दाश्त करता है,दो वक़्त का खाना,दो वक़्त का नाश्ता,माहाना वज़ीफ़ा,ग़रीब तलबा के आने जाने का किराया,कपडे,साबुन,मौसमे सर्दी गर्मी के मुताबिक़ इन की तमाम ज़रूरियात का इंतिज़ाम ख़ुद जामिया करता है;ताके ज़हनी यकसूई और इत्मीनान के साथ तलबा तहसीले उलूमे नबवी में मसरूफ़ रहें। अल्लाह तआला अपनी शाने रुबूबियत से इन की बेहतरीन तर्बियत फ़र्माकर उलूमे नबवी और अख़्लाक़े नबवी से आरस्ता फ़र्माये। आमीन

क़वानीने दाख़ला:

दाख़ले के वक़्त तलबा से कोई दाख़ला फ़ीस नही ली जाती है;लेकिन जिन हज़रात को अल्लाह तआला ने माल व दौलत से नवाज़ा है,और वह ज़कात अदा करते हैं तो ऐसे हज़रात अपनी औलाद को अपने ख़र्चे से पढायें;ताके ज़कात व सदक़ात के माल से हिफ़ाज़त हो।

जामिया में दाख़ले के लिये १२/ साल की उम्र होना लाज़िम है,नीज़

दाख़ले के लिये–तालिबे इल्म और वाली दोनों का– आधार कार्ड,राशन कार्ड,पैदाइश (जनम) दाख़ला और चार चार फ़ोटो लान ज़रूरी है।

जामिया की तालीमी सरकर्दगी:

जामिया में तजवीद व क़िराअत पर ख़ुसूसी तवज्जुह दी जाती है,नुरानी क़ाइदा पढने वाले तलबा और दरजाते हिफ़्ज़ से लेकर दरजए अरबी सुव्वम तक तजवीद लाज़मी है,इस शोबे में तहसीन व उमदगी पैदा करने के लिये एक अंजुमन लजनतुल कुर्रा के नाम से जारी है,इमसाल 19/जुमादल उख़रा 1439 हि. मुताबिक़ 8/ मार्च 2018 को इस का सालाना मुसाबक़ा हुवा जिस में जामिया डाभेल के आली वक़ार मोहतमिम हज़रत मौलाना अहमद बुज़ुर्ग साहब दामत बरकातुहुम बहैसियते सदरे जलसा तशरीफ़ लाये,इस मुसाबक़े में जामिया के अठारा तलबा ने हिस्सा लिया,अव्वल,दुव्वम,सुव्वम नम्बरात से कामियाब होने वाले और तमाम हिस्सा लेने वाले तलबा को किताबों का क़ीमती सरमाया दिया गया।

अलहम्दुलिल्लाह पिछले दो साल से जामिया में क़िराअते सबआ, सलासा, व अशरए कबीर शुरू है।

नीज़ तलबा में उर्दू व अरबी ज़ुबान में तक़रीरी सलाहियत पैदा करने और उन्हे मैदाने ख़िताबत का कामियाब शहसवार बनाने के लिये दो अंजुमन क़ाइम हैं: एक अंजुमन जमिअतुत्तलबा और दूसरी अलमख़्तबतुल फ़सीहा बिल्लुग़तिल अरबिया के नाम से मौसूम है,इन अंजुमनों में हफ़्ते में एक मर्तबा जुमेरात के दिन बाद मग़रिब मश्क़ व तमरीन का प्रोग्राम होता है।

इब्तिदाई साल में यह अंजुमनें इफ़्तिताही इज्लास मुनअक़िद करती हैं, फिर साल के अख़िर में इख़्तितामी प्रोग्राम भी करती हैं,इस साल भी माहे जुमादल उख़रा में इन अंजुमनों के इख़्तितामी व मुसाबक़ती प्रोग्राम मुनअक़िद हुये थे,जिस में मुसाहिमीन और कामियाब होने वालों को जामिया की तरफ़ से इनआमात की शक़्ल में क़ीमती किताबें दी गईं।

दीगर शोबों को तरह एक शोबा हम्द,नात व नज़म का है। जिस में तलबा बडे शौक़ व ज़ौक के साथ हम्द व नात पढने की मश्क़ करते हैं, और इस का भी सालाना मुसाबक़ा होता है,अल्लाह तआला जामिया और उस के तमाम शोबों को तरक़्क़ी अता फ़र्माये और नज़रे बद से महफ़ूज़ फ़र्माये। आमीन

जामिया की ज़ेरे निगरानी चलने वाले मकातिब व मदारिस:

जामिया की दो बराहे रास्त शाख़ें चलती हैं,एक मदरसा दारुल उलूम उम्मुल मोमिनीन के नाम से मिरज में,जहां तक़रीबन पचास तलबा नाज़रा व हिफ़्ज़ की तालीम हासिल कर रहे हैं,दूसरी शाक़ मदरसा अहमदिया महमूदिया बद्रुल उलूम के नाम से इचलकरंजी में, वहां भी तक़रीबन ४०/ तलबा ज़ेरे तालीम हैं,दोनों शाख़ों का मुकम्मल तालीमी निज़ाम,असातिज़ा का तक़र्रुर, इम्तिहानात का निज़ाम वग़ैरा जामिया ही से होता है।

मौलाना अब्दुस्समद साहब नाईब मोहतमिमे जामिया की ज़ेरे निगरानी जामिया की तरफ़ से अतराफ़ व अकनाफ़ –बस्तवाड, आलास, शेडशाळ, जयसिंगपूर,अगर,गौरवाड,घालवाड,इचलकरंजी,चालीसगांव जिल्हा नासिक– में कई मकातिब चल रहे हैं,वहां पढाने वाले असातिज़ा की तनख़ा वग़ैरा भी जामिया की तरफ से दी जाती है,कुर्ब व जवार के जामिया के बाज़ असातिज़ा इम्तिहान के लिये भी जाते हैं,अलहम्दुलिल्लाह तालीम भी इत्मीनान बख़्श है।

हुज्जाज तर्बियती कॅम्पः

गुज़िश्ता चंद सालों से हज के मुबारक सफ़र से पहले आज़मीने हज के लिये जामिया के मुफ़्तियाने किराम के निगरानी में एक तर्बियती कॅम्प लगाया जा रहा है, जिस में हज व उमरा का तरीक़ा,मसाईल नीज़ मदीना मुनव्वरा की हाज़री के आदाब वग़ैरा सिखाये जाते हैं,इन्शाअल्लाह आईंदा भी यह प्रोग्राम होता रहेगा।

तहफ़्फ़ुज़े शरीअतः

फ़िरक़े बातिला के रद्द व तआकुब के लिये इस शोबे का क़ियाम अमल में आया है,इलाक़े में जहां कहीं भी गुमराह फ़िरक़े की सर गर्मी महसूस हो तो अहले हक़्क़ उलमा,बडे मदारिस और जामिया को उस की इत्तिला दें;ताके बरवक़्त उस को ख़त्म किया जा सके ,अल्लाह तआला तमाम फ़िरक़े बातिला से उम्मत की हिफ़ाज़त फर्माये और उम्मत को अक़ाईदे हक़्क़ा पर साबित क़दम रख़्खे और उन पर जमे रहने की तौफ़िक़ अता फ़र्माये। आमीन

ख़ानक़ाही निज़ामः

अलहम्दुलिल्लाह उम्मत की इस्लाह व फ़लाह की ग़र्ज़ से हज़रत मुफ़्ती साहब के हुक्म और हज़रत वालिद साहब रह.के क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ ख़ानक़ाही निज़ाम बराबर जारी है,हर साल रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरे का एतिकाफ़ भी होता है,अब यह सिलसिला हज़रत मौलाना के इंतिक़ाल के

बाद भी जारी है।

शोबए दावत व तब्लीग़:

जामिया में क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ हल्क़े के ज़िम्मेदारों के मश्वरे से तै शुदा रुख़ के मुताबिक़ जुमेरात के रोज़ बाद नमाज़े अस्र २४/ घंटे की जमात निकलती है,और जुम्मा के रोज़ अस्र के बाद वापस होती है।

जामिया का दारुलइफ़्ता:

रोज़ मर्रा के मसाईल मालूम करने के लिये हमेशा अवामुन्नास,उलमाए किराम और मुफ़्तियाने इज़ाम की तरफ़ रुजू करते हैं,इसी लिये हर बडे इदारे में बाक़ाईदा दारुल इफ़्ता क़ाइम होता है,गुज़िश्ता चंद सालों से जामिया हाज़ा में भी यह शोबा क़ाइम हुवा है,यह शोबा सुवालात के जवाबात पूरी तहक़ीक़ व तफ़तीश के बाद फ़राहम करता है,मुसलमानों के इन्फ़िरादी व इज्तिमाई मसाइल में तहरीरी फ़तावा की सूरत में उन की रहनुमाई करता है,इमसाल (३८) और अबतक कुल (२६१) सुवालात के जवाबात दिये गये हैं,और कई मीरास के मामलात हल किये गये हैं,नीज़ इस के अलावा कई अफ़राद ख़ुद हाज़िर होकर जुबानी मसाइल मालूम करते हैं और फ़ोन के ज़रिये भी मसाइल में लोगों की शरई रहनुमाई की जाती है।

जामिया के सालाना ख़रच:

दिन ब दिन ज़रूरत की चीज़ों में बढती हुई क़ीमतों की वजह से सालाना मसारिफ़ भी बढते जारहे हैं;मगर ख़ुदावंद क़ुद्दूस के फ़ज़्ल व करम और मुख़य्यिर हज़रात की सख़ावतों से काम चल रहा है।

इमसाल भी असातिज़ा की तनख़्वाहों,किताबों और दवाई का ख़र्च 54,49,387 रूपये हुये,अनाज,किराना,दूध,गॅस, लाइट का ख़र्च 27,66,260 रूपये हुये, इस के अलावा साल भर में होने वाले सफ़र ख़र्च, किरायाजात, जनरेटर, हार्डवेअर, इलेक्ट्रीक, फ़र्नीचर और जनरल ख़र्च नीज़ सरकारी कामों के लिये ख़र्च होने वाली रक़म 4,10,938 रूपये है,

इस साल जामिया का कुल ख़र्च 86,26,585 रूपये हुवा है।

तामीरी ख़र्च:

दारुल इक़ामा की तामीर और मेहमान ख़ाना की मरम्मत के लिये ३६९४९७८ छत्तीस लाख चौरानवे हज़ार नऊ सौ अठहत्तर रूपये ख़र्च हुये ।

अज़ाइम:

दारुल इक़ामा का तामीरी काम शुरू है,जिस का तक़रीबन दो करोड का ख़र्च है,अबतक तक़रीबन चालीस लाख रूपये का काम हुवा है,और अभी काम बाक़ी है,लिहाज़ा आप हज़रात अपने लिये,अपने वालिदैन,रिश्तेदारों के ईसाले सवाब के लिये इस में हिस्सा ले कर आख़िरत का सामान तयार फ़र्मायें,नीज़ आफ़ियत व सहूलत के साथ इस की तकमील के लिये तमाम हज़रात से ख़ुसूसन दुआ की दरख़्वास्त करता हूं।

इस के बाद एक लायब्रेरी की तामीर का इरादा है,तलबा के मुताले के लिये एक लायब्रेरी की ज़रूरत है,इस के लिये तमाम हज़रात दुआ और तआवुन दोनों फ़र्माते रहें,अल्लाह तआला इस के लिये अस्बाब मुहय्या फर्माये। आमीन

फकत वस्सलाम

(हज़रत)मौलाना अहमदुल्लाह साहिब इराणी

मोहतमिम जामिया ख़ैरुल उलूम असादाबाद उदगांव

इस्लामी अक़ाइद

ईमान का बयान

ईमान अरबी ज़ुबान में किसी की बात को किसी के एअतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने को कहते हैं और शरीअत में रसूल की ख़बर को महज़ रसूल के एअतिमाद पर मुशाहदा किये बग़ैर यक़ीनी तौर से मान लेने को कहते हैं।

ईमान की मुफ़स्सल तफ़सील यह है के अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात पर, उस के फ़रिश्तों पर, उस की किताबों पर, उस के रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर, और उस बात पर के अच्छी बुरी तक़दीर अल्लाह तआला की तरफ़ से है,और मौत के बाद दोबारा ज़िंदा कर के उठाये जाने पर ईमान लाना।(1)

अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात से मुतअल्लिक़ अक़ाइद

(१) अल्लाह तआला एक है,वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में यकता है।

(२) उस में तमाम अच्छी सिफ़ात कामिल तौर पर मौजूद हैं,जो न कभी बदलेंगी,न ही ख़तम होंगी।

(३) कोई चीज़ उस की तरह नहीं,वह सब से निराला है,वह मख़लूक़ जैसे हाथ पांव,नाक,कान और शक्ल व सूरत से पाक है,उस की ज़ात की बारीकी को कोई नहीं जान सकता। हम अल्लाह तआला को उस की सिफ़ाते कमालिया से पहचानते हैं,मसलन यह के अल्लाह ख़ालिक़ है,राज़िक़ है,रहमान है,वग़ैरा।

(४) वह ख़ुद ब ख़ुद हमेशा से है,और हमेशा रहेगा।

(५) सब उस के मोहताज हैं,वह किसी का मोहताज नहीं।

(६) न वह सोता है,न ऊंघता है,न खाता है न पीता है,न उस ने किसी को जना और न ही उस को किसी ने जना,न उस की कोई बीवी है,न किसी से उस का रिश्ता नाता है,वह हर ऐब से पाक है।

(७) उस को हर चीज़ पर कुदरत है,दुनिया की तमाम बातें उस के इख़्तियार और इरादे से होती हैं,वह किसी काम में मजबूर नहीं,वह जो चाहता है करता है,कोई उस को रोक टोक करने वाला नहीं। कोई चीज़ उस के ज़िम्मे ज़रूरी नहीं,वह जो कुछ मेहरबानी करे उस का फ़ज़्ल है,हर चीज़ पर उसी का तसर्रुफ़ और क़ब्ज़ा है,ज़बरदस्त कुव्वत व ताक़त का मालिक है,उस ने ही सब को संभाला हुवा है,वही सब को फ़ना करेगा।

(1) (फ़तहुल बारी,किताबुल ईमान,बाबु क़ौलिन्नबी स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम: १/६४, उमदतुलक़ारी,किताबुल ईमान,बाबुल ईमान व क़ौलिन्नबी स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम:१/१७२ ता १७५

(८) कोई छोटी बडी चीज़ उस के इल्म से बाहर नहीं,हर चीज़ को उस के वुजूद से पहले और उस के ख़तम हो जाने के बाद भी जानता है,वह दिल के ख़यालात से भी बा ख़बर है।

(९) वही चीज़ों का और हालात का ख़ालिक़ और मालिक है,हर क़िस्म के हालात उसी की तरफ़ से आते हैं, ज़िंदगी मौत, इज़्ज़त ज़िल्लत, नफ़ा नुक़सान, कामयाबी ना कामी, राहत मशक़्क़त, ख़ुशी गमी, हंसना रोना, तंदरुस्ती बीमारी, अमन ख़ौफ़, तंगदस्ती तवंगरी, हिफ़ाज़त हलाकत गर्ज़ यह के हर क़िस्म के हालात जो किसी भी मख़लूक़ पर आते हैं, वह सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की तरफ़ से आते हैं, उन हालात के आने में, मुल्क व माल और असबाब का कोई दख़ल नहीं।

(१०) वह सब कुछ सुनता देखता है, वह हलकी से हलकी आवाज़ को सुनता और छोटी से छोटी चीज़ को देखता है, उस के सुन्ने और देखने में नज़दीक दूर, अंधेरे उजाले का कोई फ़र्क़ नहीं, अंधेरी रात में काली च्यूंटी के चलने और उस के पांव की हरकत को बख़ूबी जानता और देखता है।

(११) वह अपने बंदों पर मेहरबान है, वही अपने बंदों को सब आफ़तों से बचाता है, वही इज़्ज़त वाला है, गुनाहों का बख़्शने वाला है, बहुत देने वाला है, रोज़ी पहुंचाने वाला है, जिस के लिए चाहता है रोज़ी तंग कर देता है और जिस के लिए चाहता है ज़ियादा कर देता है, जिस को चाहता है पस्त कर देता है और जिस को चाहता है बुलंद कर देता है, जिस को चाहता है इज़्ज़त देता है, जिस को चाहता है ज़लील कर देता है, इन्साफ़ वाला है, दुआ का क़बूल करने वाला है।

(१२) उस का कोई काम हिकमत से ख़ाली नहीं।(1)

फ़रिश्तों से मुतअल्लिक़ अक़ाइद

(१) फ़रिश्ते मासूम हैं, अल्लाह तआला ने उन्हें नूर से पैदा किया है, वह बुग़्ज़, हसद, ग़ज़ब, तकब्बुर, हिर्स, ज़ुल्म वग़ैरा सब से पाक हैं।

(२) वह बे शुमार हैं, उन की ताअदाद अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता।

(३) बाज़ फ़रिश्तों के दो पर हैं,बाज़ के तीन,बाज़ के चार और बाज़ फ़रिश्तों के चार से भी ज़ियादा पर हैं।

(1) (शरहुल अक़ीदतित्तहाविय्या: सफ़हा ८०,अलमुहन्नद अललमुफ़न्नद: सफ़हा:५४,माख़ज़ुहु बिहिश्ती ज़ेवर,अक़ीदों का बयान: ५० ता ५२)

(४) वह न इन्सानों की तरह खाते पीते है, न सोते हैं और न इन्सानों की तरह मर्द व औरत हैं,वह कभी इन्सानी शक्ल में भी ज़ाहिर होते हैं,चुनांचे कुरआने करीम में हज़रत इब्राहीम,हज़रत लूत और हज़रत मरयम अलैहिमुस्सलाम के क़िस्से में मज़कूर है के फ़रिश्ते इन्सानी शक्ल में उन के पास आये थे।(1)

(५) बाज़ फ़रिश्तों का दर्जा बाज़ से ज़ियादा है,लेकिन उन के मर्तबे अल्लाह तआला के इल्म में है।

(६) चार फ़रिश्ते ज़ियादा मशहूर हैं:

(१)हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम।

(२)हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम।

(३)हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम।

(४)हज़रत इज़्राईल (मलकुल मौत)अलैहिस्सलाम।

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम का मर्तबा अल्लाह तआला के नज़दीक सब फ़रिश्तों से ज़ियादा है,बडी कुव्वत वाले हैं,यह अंबिया अलैहिमुस्सलाम के पास वही लाते हैं,और अल्लाह तआला के हुक्म से बंदों की ज़रूरियात पूरी करना भी उन्ही के सुपुर्द है।

हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम

हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम मख़लूक़ात को रोज़ी पहुंचाने और बारिश वग़ैरा के इंतिज़ामात पर मुक़र्रर हैं।

हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम

हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम क़यामत के दिन सूर फूंकेंगे।

हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम

हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुक्म से रूह क़ब्ज़ करते हैं।

इन के अलावा चंद मशहूर फ़रिश्ते यह हैं:

(१) किरामन कातिबीन यह चार फ़रिश्ते हैं,दो दिन में और दो रात में,हर एक इन्सान के साथ रहते हैं,एक दायें कंधे पर जो नेकी लिखता है और दूसरा बायें कंधे पर जो बुराई लिखता है।

(२) हफ़ज़ह वह फ़रिश्ते जो इन्सान को मूसीबतों से बचाने पर मुक़र्रर हैं।

(३) मुनकर नकीर वह फ़रिश्ते जो इन्सान के मर जाने के बाद क़ब्र में उस से

(1) (हूद: ६९)

सुवाल करने पर मुक़र्रर हैं।

(४) कुछ फ़रिश्तों को हुक्म है के दुनिया में चलें फिरें और ऐसी मजलिसों में हाज़िर हुवा करें जहां अल्लाह तआला को याद किया जा रहा हो,दीन की तालीम हो रही हो,क़ुरआने मजीद की तिलावत हो रही हो,दुरूद पढा जा रहा हो और जितने लोग वहां हाज़िर हों,उन सब की हाज़री की गवाही अल्लाह तआला के सामने दें।

इन फ़रिश्तों की सुबह व शाम तबदीली होती रहती है,सुबह के नमाज़ के वक़्त रात वाले फ़रिश्ते आसमानों पर चले जाते हैं और दिन में काम करने वाले आ जाते हैं,अस्र की नमाज़ के बाद दिन वाले फ़रिश्ते चले जाते हैं और रात में काम करने वाले आ जाते हैं।

(५) कुछ फ़रिश्ते जन्नत के इंतिज़ाम पर मुक़र्रर हैं, जो जन्नत के दारोग़ा रिज़वान के मातहत हैं।

(६) कुछ फ़रिश्ते दोज़ख़ के इंतिज़ाम पर मुक़र्रर हैं, जो दोज़ख़ के दारोग़ा मालिक के मातहत हैं।

(७) कुछ फ़रिश्ते अल्लाह तआला का अर्श उठाये हुये हैं।

(८) कुछ फ़रिश्ते महज़ अल्लाह तआला की इबादत में मश्गूल रहते हैं,उन में से बाज़ क़ियाम में,बाज़ रुकूअ में और बाज़ सजदे में रहते हैं।

(९) इस के अलावा आसमान और ज़मीन के बहुत से काम उन के सुपुर्द किये हुये हैं,वह अल्लाह तआला के अहकाम बजा लाते हैं,और अपने सुपुर्द शुदा कामों की अंजाम दही में कभी नाफ़र्मानी नहीं करते।

शयातीन व जिन्नात

अल्लाह तआला ने कुछ मख़लूक़ात आग से पैदा की हैं,और उन को हमारी नज़रों से पोशीदा किया है,उन को जिन कहते हैं,उन में नेक व बद सब तरह के होते हैं,इन की औलाद भी होती है,उन में सब से ज़ियादा मशहूर शैतान है,जो लोगों को गुनाह पर आमादह करता है,और उन के दिलों में वसवसे डालता है।

किताबों से मुतअल्लिक़ अक़ाइद

किताबों से मुराद वह सहीफ़े और किताबें हैं जो अल्लाह तआला ने अपने नबियों पर नाज़िल फ़र्माई हैं,उन में से चार किताबें मशहूर हैं:

(१) तौरात:हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हूई।

(२) इंजील: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हूई।

(३) ज़बूर: हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हूई।

(४) क़ुरआने मजीद: हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुवा।

क़ुरआने मजीद

(१) क़ुरआने मजीद अल्लाह तआला की किताब भी है और अल्लाह तआला का कलाम भी है।

(२) पहले पूरा क़ुरआने मजीद एक ही मर्तबा लौहे महफ़ूज़ से पहले आसमान पर नाज़िल किया गया,फिर वक़्तन फ़वक़्तन ज़रूरतों के लिहाज़ से हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के वास्ते से तेईस(२३)साल के अर्से में दुनिया में नाज़िल हुवा।

(३) जिस तर्तीब से क़ुरआने मजीद अब मौजूद है,उस तर्तीब से नाज़िल नहीं हुवा,लेकिन यह मौजूदा तर्तीब भी रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बताई हुई है और आप के इर्शाद और हुक्म के मुवाफ़िक़ क़ाईम हुई है, रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह तर्तीब हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के ज़रीये अल्लाह तआला की तरफ़ से मालूम हुई और यह वही तर्तीब है जिस तर्तीब से क़ुरआने करीम लौहे महफ़ूज़ में मौजूद है।

(४) क़ुरआने मजीद आख़री किताब है,अब इस के बाद कोई आसमानी किताब नहीं आयेगी,इस किताब की किसी अदना बात के इन्कार करने से भी आदमी काफ़िर हो जाता है।

(५) क़ुरआने मजीद की हिफ़ाज़त का अल्लाह तआला ने वादा किया है,उस को कोई बदल नहीं सकता।

(६) क़ुरआने करीम की नज़ीर क़यामत तक कोई नहीं बना सकता।

(७) क़ुरआने करीम क़यामत तक के इन्सानों के लिये राहे हिदायत और ज़ाबतये हयात है।

(८) क़ुरआने करीम में बहुत से अहकाम इजमालन या तफ़सीलन बयान किये गये हैं,फिर उन की तशरीह रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने क़ौल व अमल से फ़र्माई है,और क़ुरआने करीम के अलावा भी आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला के वही के मुताबिक़ अहकाम बताये हैं,उन सब को मानना और उन सब पर अमल करना लाज़िम है

चंद आसमानी सहीफ़े

(१) इन चार बडी किताबों के अलावा कुछ सहीफ़े (छोटी किताबें)हज़रत आदम और कुछ हज़रत शीस और कुछ हज़रत इब्राहीम और कुछ हज़रत मूसा

अलैहिमुस्सलाम पर नाज़िल हुये,यह सब किताबें और सहीफ़े अल्लाह तआला का कलाम हैं।

(२) अल्लाह तआला ने क़ुरआने मजीद उतार कर उस से पहले की तमाम किताबों पर अमल करना मनसूख़ कर दिया।

क़ुतुबे साबिक़ा से मुतअल्लिक़ अक़ीदा

(१) क़ुरआने मजीद से यह बात साबित है के मौजूदा तौरात,ज़बूर और इंजील वह असली किताबें नहीं रहीं,बलके उन में यहूद व नसारा ने हुरूफ़ और अलफ़ाज़ बदल दिये हैं।

(२) उन के मुतअल्लिक़ यह अक़ीदा रखना चाहिये के यह मौजूदा तौरात,ज़बूर और इंजील असली आसमानी किताबें नहीं रहीं,बलके उन नामों की असली किताबें अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम पर नाज़िल हुई हैं।

अगर कोई शख़्स तौरात,ज़बूर,इंजील को अल्लाह तआला की किताबें न माने तो वह शख़्स काफ़िर है।

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम से मुतअल्लिक़ अक़ाइद

अंबिया अलैहिमुस्सलाम के भेजने का मक़सद

रसूलों पर ईमान लाने का मतलब यह है के अल्लाह तआला ने अपने बंदों तक अपने अहकाम पहुंचाने के लिये कुछ मुंतख़ब इन्सानों को भेजा है,उन्हें रसूल और नबी कहते हैं।

रसूल उस पैग़ंम्बर को कहते हैं जिस पर कोई किताब या सहीफ़ा नाज़िल हुवा हो,और उसे नई शरीअत दी गई हो,और नबी हर पैग़म्बर को कहते हैं ख़्वाह उसे नई शरीअत और किताब दी गई हो या न दी गई हो, वह पहली शरीअत और किसी रसूल का इत्तिबाअ करने वाला हो।(1)

अंबिया अलैहिमुस्सलाम की ताअदाद

बाज़ रिवायतों में नबियों और रसूलों की ताअदाद एक लाख चोबीस हज़ार,बाज़ में एक लाख चौंतीस हज़ार और बाज़ में दो लाख चोबीस हज़ार आई है,यह ताअदाद हतमी नहीं है,इसलिये इस तरह ईमान लाना चाहिये के अल्लाह तआला ने जितने रसूल भेजे हैं,हम उन सब को बरहक़ रसूल व नबी मानते हैं।उन में तीन सौ तेरह रसूल हैं।(2)

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम सब से पहले रसूल हैं, और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब से आख़री रसूल हैं।(3)

(1)(कश्फ़ुलबारी,बाबु कैफ़ कान बदइलवहई:१/२२७)(2)(अलबिदाया वन्निहाया:२/१२०,मजम उज़्ज़वाइद,किताबुल अंबिया:८/२७५)(3) (अत्तबक़ातुल कुबरा,ज़िक्रु तस्मियतिल अंबिया.१/३३)

रिसालत व नुबुव्वत

रिसालत व नुबुव्वत अल्लाह तआला की तरफ़ से अता होती है,उस में आदमी की कोशिश और इबादत को दख़ल नहीं है,इसीलिये कोई वली ख़्वाह अपनी मेहनत से कितना ही बडा मर्तबा हासिल कर ले,लेकिन किसी नबी के दर्जे को नहीं पहुंच सकता।(1)

अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सिफ़ात

तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम इन्सान थे और मर्द थे,नुबुव्वत से पहले और नुबुव्वत के बाद सग़ीरा कबीरा गुनाहों से पाक और मासूम थे,कामिल अक़्ल वाले थे,ऐसी बीमारियों से पाक थे जिन की वजह से लोग उन को हक़ीर समझे,उन से नफ़रत करें,उस की वजह से अल्लाह तआला के अहकाम को न मानें,मसलन: जुज़ाम,बर्स वग़ैरा।(2)

सब अंबिया अलैहिमुस्सलाम आज़ाद और अच्छे नसब वाले थे,उन की इताअत अल्लाह तआला की इताअत है,और उन की मुख़ालफ़त अल्लाह तआला की मुख़ालफ़त है,दुनिया की कोई क़ौम ऐसी नहीं जिस में कोई नबी न आया हो।

अंबिया अलैहिमुस्सलाम ने अल्लाह तआला के पैग़ाम पूरे पूरे पहुंचा दिये, उन में कमी बेशी नहीं की,न किसी पैग़ाम को छुपाया,पैग़म्बरों में से बाज़ का मर्तबा बाज़ से बडा है, सब में ज़ियादा मर्तबा हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है।(3)

हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुतअल्लिक़ अक़ाइद

(१) हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद कोई दूसरा नया शख़्स नुबुव्वत से सरफ़राज़ होकर नहीं आयेगा,और जो नुबुव्वत का दावा करे वह झूटा है, नुबुव्वत व रिसालत का मनसब रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात पर ख़तम हो गया,क़यामत तक जितने इन्सान और जिन होंगे,सब के लिये आप ही पैग़म्बर हैं।

(२) आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत का तमाम मख़लूक़ बलके अपनी जान से भी ज़ियादा होना और आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम करना हर उम्मती पर फ़र्ज़ है।(4)

(३) आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कसरत से दुरूद भेजना मुस्तहब

(1) (रद्दुल मुहतार,मतलबुन फ़ी अददिल अंबियाइ वर्रुसुल..१/५२७)(2) (माख़ज़ुहु शरहुल फ़िक़्हिल अकबर,लिलइमामिस्समरक़ंदी:१३२,१३३)(3)तफ़सीरइब्नेकसीर,अलइसरा:९५,तफ़सीरतबरी,अलहज: ७५,मिरक़ात,बाबुलकबाइर, अलफ़स्लुल अव्वल:१/१२७(4) उमदतुल फ़िक़्ह,किताबुल ईमान,हिस्सा अव्वल सफ़हा २५

और निहायत अज़ीम इबादत है।
(४)आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी क़ब्रे मुबारक में ज़िंदा हैं हयाते बर्ज़ख़ी के साथ,लेकिन यह हयाते बर्ज़ख़ी आम मुसलमानों के मुक़ाबले में ज़ियादा क़वी है,उस में रूह का रिश्ता जसद के साथ इतना ज़ियादा क़वी रहता है के उसे हयाते दुनयविया के साथ बहुत कुर्ब है,और उस की बिना पर मुतलक़न हयात का इतलाक़ किया जाता है,इसीलिये अंबिया अलैहिमुस्सलाम की न मीरास तक़सीम होती है,और न उन की अज़वाजे मुतह्हरात से बाद में कोई निकाह कर सकता है।ता हम उस ज़िंदगी में आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुकल्लफ़ नहीं हैं,नीज़ आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इस दुनिया में मौत भी आई है, यही अक़ीदा तमाम अंबिया–ए–किराम और शुहदा के बारे में रखना चाहिये।(1)
(५) आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तमाम मख़लूक़ात से ज़ियादा उलूम अता हुये थे,मख़लूक़ में से कोई भी उन उलूम तक नहीं पहुंच सकता।
(६) आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ानदाने कुरैश में से हैं, आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सिलसिलए नसब इस तरह है: मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्देमनाफ़ बिन कुसै बिन किलाब बिन मुर्रा बिन काअब बिन लुऐ बिन ग़ालिब बिन फ़ेहर बिन मालिक बिन नज़र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इलयास बिन मुज़र बिन निज़ार बिन मअद बिन अदनान ।

चार पुश्त तक हर मुसलमान को यह नसब नामा ज़ुबानी याद रखना चाहिये।
(७) आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही चालीस साल की उम्र में नाज़िल हुई,वही नाज़िल होने के बाद तेराह साल मक्का मुअज़्ज़मा में और दस साल मदीना मुनव्वरा में तबलीग़े इस्लाम फ़र्माते रहे,६३साल दो दिन की उम्र में ११हिजरी बरोज़ पीर विसाल फ़र्माया।
(८) आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोअजिज़ात बहुत ज़ियादा हैं, आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सब से बडा मोअजिज़ा कुरआने मजीद है,जो क़यामत तक रहेगा।

आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक मोअजिज़ा मेअराज है,अल्लाह तआला ने आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आसमानों पर बुलाया और

(1) माख़ज़ुहु फ़तावा उस्मानी,किताबुल ईमान वलअक़ाइद:१/६०

जन्नत व दोज़ख़ की सैर कराई और वह मक़ामे कुर्ब अता फ़र्माया जो न कभी किसी को हासिल हुवा और न आइंदा किसी को हासिल होगा।

आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक मोअजिज़ा शक़्कुल क़मर है, एक मर्तबा कुफ़्फ़ारे मक्का के मुतालबे पर रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उंगली के इशारे से चांद के दो टुकडे हो गये,और सब हाज़िरीन ने दो टुकडे देख लिये के एक टुकडा मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में चला गया और बिलकुल अंधेरा हो गया,फिर दोनों टुकडे वहीं से तुलूअ हो कर दोबारा मिल गये और चांद जैसा था,वैसा ही हो गया।

मोअजिज़ा

किसी नबी या रसूल के हाथों नुबुव्वत के बरहक़ होने और उन की सच्चाई को साबित करने के लिये अल्लाह तआला ने उस के हाथों ऐसी नई नई और मुशकिल मुशकिल बातें ज़ाहिर कीं जो और लोग नहीं कर सकते,ऐसी बातों को मोअजिज़ा कहते हैं।(1)

अल्लाह तआला ने जिस पैग़म्बर को भी दुनिया में भेजा उस को मोअजिज़े भी दिये ताके लोगों के सामने उन का पैग़म्बर होना,वाज़ेह तौर पर साबित हो जाये।

चंद मशहूर मोअजिज़े यह हैं:

(१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी का सांप बन जाना।

(२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मुर्दों को ज़िंदा करना।

(३) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के हाथ में लोहे का नर्म हो जाना।

(४) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर आग का ठंडा हो जाना।

(५) हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम के लिये हामिला उंटनी का पहाड में से पैदा होना।

(६) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लिये जिन्नात और हवाओं का ताबेदार होना।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम

जिस शख़्स ने ईमान की हालत में रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा या आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और ईमान पर उस की वफ़ात हुई,वह सहाबी है।(2)

मक़ामे सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अनहुम

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु

(1) (रद्दुल मुहतार,फ़सलुन फ़ी सुबूतिन्नसब,मतलबुन फ़ी सुबूति करामातिल औलिया:३/५५१)(2) (अलइसाबतु फ़ी तमईज़िस्सहाबति,अलफ़स्लुल अव्वल फ़ी ताअरिफ़िस्सहाबी:१/७)

अलैहि व सल्लम और उम्मत के दर्मियान एक मुक़द्दस वास्ता होने की वजह से एक ख़ास मक़ाम रखते हैं,चुनांचे अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में उन की ताअरीफ़ फ़र्माई है और फ़र्माया: हम ने उन के दिलों में ईमान की मुहब्बत और कुफ्र व फ़िस्क़ की नफ़रत डाल दी है,(1)

उन के लिये मग़फ़िरत और उन से हमेशा की रज़ामंदी का एलान फ़र्माया है।(2)

और उन के लिये हमेशा की कामयाबी और आख़िरत में उन से मुख़्तलिफ़ इनआमात का वाअदा फ़र्माया है। (3)

रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत बहुत बडी चीज़ है, इस उम्मत में सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम का रुतबा सब से बडा है, एक लमहे के लिये भी जिस को रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत हासिल हो गई,बाद वालों में बडे से बडा भी उस के बराबर नहीं हो सकता, जिस तरह कोई सहाबी नबी के दर्जे पर नहीं पहुंच सकता इसी तरह कोई वली सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अनहुम के दर्जे पर भी नहीं पहुंच सकता। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम के मर्तबे आपस में कम ज़ियादा हैं।

तमाम सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम में सब से अफ़ज़ल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ फिर हज़रत उमर फ़ारूक़ फिर हज़रत उस्मान फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अनहुम हैं,यही चारों सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से पर्दा फ़र्माने के बाद,दीन का काम संभालने और जो इंतिज़ामात आंहज़रत स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्माते थे,उन्हें क़ाइम रखने में आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा हुये हैं।

सब से पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अनहु हैं,उन की मुद्दते ख़िलाफ़त दो साल तीन माह नौ दिन है।

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अनहु हैं, उन की मुद्दते ख़िलाफ़त दस साल छे महीने पांच दिन है।(4)

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अनहु हैं, उन की मुद्दते ख़िलाफ़त बाराह साल है।

चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अनहु हैं, उन की मुद्दते ख़िलाफ़त पांच साल है।(5)

---

(1) (अलहुजरात:८) (2) (अलबय्यिना:८) (3) (अलहुजरात:२९) (4) सीरते ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन७७, (5) सीरते ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन१९०

इन चारों को ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन कहते हैं।ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन के बाद उन छे सहाबा का मर्तबा है जिन को चारों ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन समेत आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नत की बशारत दी,उन को अशर–ए–मुबश्शरह कहते हैं।उन छे के नाम यह हैं:

हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर,हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत सईद बिन ज़ैद, हज़रत अबूउबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु तआला अनहुम अजमईन।

अशर–ए–मुबश्शरह के बाद अहले बदर का दर्जा है,अहले बदर के बाद अहले उहद का मर्तबा है।अहले उहद के बाद अहले बैअते रिज़वान का दर्जा है, उन के बाद मुहाजिरीन व अन्सार का,उन के बाद बाक़ी सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अनहुम का दर्जा है।(1)

सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम ख़ुसूसन मुहाजिरीन व अन्सार से बद गुमानी रखना,उन को बुरा कहना,क़ुरआने मजीद की सरीह मुख़ालफ़त और शरीअते इलाहिया की खुली हूई बग़ावत है।(2)

फ़ाइदा: मुहाजिरीन उन सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम को कहते हैं:जिन्हों ने अल्लाह तआला और उस के रसूल स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिये अपने वतन को छोड दिया,उन की मजमूई ताअदाद एक सौ चौदा थी और अन्सार उन सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम को कहते हैं: जो मदीना मुनव्वरा के रहने वाले थे,और उन्हों ने रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और मुहाजिरीन को अपने शहर में जगह दी, और हर तरह की मदद की।

रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस चचाओं में से सिर्फ़ हज़रत हमज़ा और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा ईमान लाये थे और आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पांच फूफियों में से सिर्फ़ हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु तआला अनहा ने इस्लाम क़बूल किया।

ज़रूरते शरई और नेक नियत के बग़ैर सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम के बाहमी झगडों का बयान करना हराम है,जिन सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम में बाहम कोई झगडा हुवा हो,वहां हमें दोनों फ़रीक़ से हुस्ने ज़न रखना और दोनों का अदब करना लाज़िम है।

फ़ाइदा: हज़राते सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम के दर्मियान

(1)(मिरक़ातुल मफ़ातीह,किताबुल मनाक़िब बाबु मनाक़िबिस्सहाबा:१०/३५५)(2)(शरहुल अक़ाइद:११६)

बाज़ मवाक़ेअ पर इजतिहादी इख़्तिलाफ़ात भी हुये हैं और उन इख़्तिलाफ़ात के नतीजे में जंगे जमल और जंगे सिफ़्फ़ीन की नौबत आई,जंगे जमल में एक तरफ़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अनहु और दूसरी तरफ़ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अनहा और हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा थे,जंगे सिफ़्फ़ीन हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा के दर्मियान पेश आई।जंगे जमल ग़लत फ़हमी की हीला साज़ी की वजह से पेश आई,जब के जंगे सिफ़्फ़ीन हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अनहु की इजतिहादी ख़ता के सबब ग़लत फ़हमी में वाक़ेअ हुई,दोनों जंगों में हिस्सा लेने वाले हज़रात अकाबिर सहाबा में से थे,और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अनहु की फ़ज़ीलत और अहलियते ख़िलाफ़त के क़ाइल थे,अलबत्ता हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अनहु की शहादत का वाक़िआ इख़्तिलाफ़ का सबब बन गया।

यह सब हज़रात चाहते थे के हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अनहु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अनहु के क़ातिलों से क़िसास लें,जब के हालात की नज़ाकत को देखते हुये हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अनहु का मन्शा यह था के अभी क़िसास के मसअले को न उठाया जाये,जब हालात साज़गार होंगे तो क़िसास के सिलसिले में पेश रफ़्त की जायेगी,यह इख़्तिलाफ़ चूंके इजतिहादी था,न के ज़ाती।(1)

चुनांचे अहले सुन्नत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है के इस इख़्तिलाफ़ में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अनहु हक़ पर थे,जब के हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अनहु से इजतिहादी ख़ता हुई और इजतिहादी ख़ता पर अक़लन व शरअन मुवाख़ज़ा नहीं हो सकता।(2)

लिहाज़ा इस ख़ता पर उन को बुरा कहना जाइज़ नहीं,क्यूंके वह भी सहाबी हैं और तमाम सहाबा के लिये अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मग़फ़िरत और अपनी रज़ा का ऐलान कर दिया है।(3)

सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम की ताअदाद

सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम की ताअदाद ग़ज़व–ए–बदर में तीन सौ तेराह थी।(4)

(1) (मिरक़ातुल मफ़ातीह,अलमनाक़िब वलफ़ज़ाइल,बाबु मनाक़िबिस्सहाबा:१०/३५५)(2)(फ़तावा हक़्क़ानिया,किताबुल अक़ाइद,मुशाजराते सहाबा:१/३४४)(3) (अलइसाबतु फ़ी तमईज़िस्सहाबति, अलफ़स्लुस्सालिस फ़ी बयानि हालिस्सहाबा:१/९ ता १२)(4) (अत्तबक़ातुल कुबरा,ग़ज़व–ए–बदर: १/३५९)

और हुदैबिया में पंदराह सौ।(1)
फतहे मक्का में दस हज़ार (2)
हुनैन में बाराह हज़ार (3)

हज्जतुल वदाअ यानी हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आख़री हज में एक लाख चौबीस हज़ार (4)
गज़्व-ए-तबूक में तीस हज़ार (5)

और बवक़्ते वफ़ाते हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कम व बेश एक लाख चौबीस हज़ार और जिन सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम से कुतुबे हदीस में रिवायात मनकूल हैं,उन की ताअदाद साढे सात हज़ार है।

अज़वाजे मुतह्हरात रज़ियल्लाहु तआला अनहुन्न

रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़वाजे मुतह्हरात ग्याराह थीं, हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अ़हा, हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु तआला अनहा,इन दोनों की वफ़ात आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते मुबारका में हो गई थी, हज़रत आइशा, हज़रत हफ़्सा, हज़रत उम्मे हबीबा, हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश, हज़रत उम्मे सलमा, हज़रत सफ़िया, हज़रत सौदा, हज़रत मैमूना और हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अनहुन्न।

तमाम अज़वाजे मुतह्हरात रज़ियल्लाहु तआला अनहुन्न अल्लाह तआला और उस के रसूल स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरगुज़ीदा और तमाम ईमान वालों की मायें हैं और सारे जहान की ईमान वाली औरतों से अफ़ज़ल हैं, उन में भी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अनहा और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अनहा का रुतबा ज़ियादा है।(6)

साहिब ज़ादियां

रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहिबज़ादियां चार थीं:

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु तआला अनहा उन का निकाह हज़रत अबुलआस बिन रबीअ रज़ियल्लाहु तआला अनहु से हुवा।

हज़रत रुक़ैय्या, हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा,इन दोनों का निकाह यके बाद दीगरे हज़रत उस्मान ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अनहु

(1) (अलबिदाया वन्निहाया,ग़ज़वतुल हुदैबिय्या:४/१३१)(2) (अत्तबक़ातुल कुबरा,ग़ज़वतु रसूलिल्लाहि स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आमल फ़तहि:१/४४०)(3) (अलबिदाया वन्निहाया,ग़ज़वतु हवाज़िनि यौम हुनैन:४/२४३)(4) (मदारिजुन्नुबुव्वति,हज्जतुल वदाअ:२/५६७)(5) (अत्तबक़ातुल कुबरा,ग़ज़वतु रसूलिल्लाहि स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक:१/४६२)(6) (सियरुस्सहाबा,अज़वाजे मुतह्हरात:६/२०ता ९०)

के साथ हुवा,हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अनहा,इन का निकाह हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अनहु के साथ हुवा।

यह चारों साहिबज़ादियां बडी बरगुज़ीदा और साहिबे फ़ज़ाइल थीं,उन चारों में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अनहा का रुतबा सब से ज़ियादा है, वह अपनी माओं के सिवा तमाम जन्नती औरतों की सरदार हैं।(1)

औलिया-ए-किराम रहिमहुमुल्लाहु तआला

मुसलमान जब ख़ूब इबादत करता है,अल्लाह तआला के हुक्मों पर पूरी तरह चलता है,और रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़ों पर अमल करता है,तो अल्लाह तआला उस को महबूब रखते हैं,ऐसे शख़्स को वली कहते हैं।

वली ख़्वाह कितना ही बडा हो जाये,नबी के बराबर नहीं हो सकता,वह अल्लाह तआला का कैसा ही प्यारा हो जाये,मगर जब तक उस के होश व हवास दुरुस्त हैं,शरीअत का पाबंद रहना फ़र्ज़ है,नमाज़ रोज़ा और कोई फ़र्ज़ इबादत मुआफ़ नहीं होती,और जो गुनाह की बातें हैं,वह उस के लिये दुरुस्त नहीं हो जातीं,जो शख़्स शरीअत के ख़िलाफ़ अमल करे वह अल्लाह तआला का दोस्त या वली नहीं हो सकता।(2)

करामत

वली के ज़रीये से अल्लाह तआला बाज़ ऐसी बातें ज़ाहिर करता है जो और लोगों से नहीं हो सकतीं,ऐसी बातों को करामत कहते हैं।

कशफ़े औलिया

औलिया को राज़ की बाज़ बातें सोते या जागते में मालूम हो जाती हैं,उन में जो शरीअत के मुताबिक़ हो वह क़बूल है और जो मुताबिक़ न हो वह क़बूल नहीं।(3)

तक़दीर का बयान

क़ज़ा व क़द्र हक़ है,और उस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है,ईमान बिलक़द्र के माअना यह हैं के इस बात का यक़ीन और एतिक़ाद रख्खा जाये के अल्लाह तआला ने मख़लूक़ के पैदा करने से पहले ही ख़ैर और शर को,ईमान और कुफ़्र को,हिदायत और ज़लालत को,इताअत और माअसियत को और जिस से भी जो फ़ेअल सादिर हो रहा है और जिस को जो कुछ और जितना कुछ मिल रहा

(1) (सियरुस्सहाबा,बनाते ताहिरात:६/९५,ता १०१)(2) (शरहुल फ़िक़हिल अकबर,लिलमुल्ला अली अलक़ारी रहिमहुल्लाह:७९)(3) (शरहे अक़ाइद नसफ़ी: सफ़हा १०५,रद्द ?ुल महतार,बाबुल इद्दति मतलबुन फ़ी सुबूति करामात: ३/५५१)

है और जो जो हालात पेश आ रहे हैं उन सब को मुक़द्दर फ़र्मा दिया है और उन को लिख दिया है।

अब आलम में जो कुछ हो रहा है,वह सब उस के इरादे और मशियत से हो रहा है और जो कुछ हो रह है उस को पहले ही से पूरे तौर पर उसका इल्म था। जब इन्सान किसी काम के करने का इरादा करता है तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उसे एक क़िसम की ताक़त मिलती है।इन्सान को इख़्तियार दिया गया है के वह इस ताक़त को चाहे नेक काम में लगाये या बुरे काम में,नेक काम में लगाने की वजह से सवाब मिलता है और बुरे काम में लगाने की वजह से सज़ा होती है।जिस काम के करने की इन्सान में ताक़त नहीं अल्लाह तआला ने भी उस काम के करने का हुक्म नहीं दिया,ख़ैर व शर,हिदायत व गुमराही का पैदा करना बुरा नहीं,बलके मसलिहत के मुताबिक़ है,ताके नेक व बद का इम्तिहान लिया जाये और हस्बे हाल जज़ा व सज़ा दी जाये,अलबत्ता गुमराही का करना बुरा है और करना न करना इन्सान का अमल है और इसी पर उस को सज़ा मिलेगी।

नबी–ए–करीम स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तक़दीर के मुआमले में बहस व मुबाहसा करने से निहायत सख़्ती के साथ मना फ़र्माया है।

लिहाज़ा हमारे लिये ज़रूरी है के हम इस मसअले में बहस न करें।(1)

क़यामत और अलामाते क़यामत

क़यामत का दिन

जब दुनिया में कोई भी अल्लाह तआला को पहचानने वाला न रहेगा और लोग खुले आम बकसरत जानवरों की तरह अपनी शहवतें पूरी करने लगेंगे,और ज़ुल्म व ज़ियादती आम हो जायेगी तो एक दिन अचानक दस मुहर्रम को जो जुमए का दिन भी होगा,एक फ़रिश्ता जिस का नाम इसराफ़ील है,अल्लाह तआला के हुक्म से सूर फूंकेगा जिस के सबब तमाम ज़मीन व आसमान और जो कुछ उन के दर्मियान है सब फ़ना हो जायेगा,और चालीस साल बाद यही फ़रिश्ता अल्लाह तआला के हुक्म से दोबारा सूर फूंकेगा जिस के सबब तमाम मुर्दे ज़िंदा हो जायेंगे।एक मर्तबा तमाम आलम के फ़ना हो जाने और फिर दोबारा ज़िंदा हो कर खडे हो जाने का नाम क़यामत है,क़ुरआन व हदीस में उस आने वाले हादसे का ख़ूब बयान हुवा है,उस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

क़यामत कब क़ाइम होगी,उस का मुतअय्यन वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त

(1) (सही मुस्लिम,किताबुलक़द्र:२/३३२ता३३८,तफ़सीरुलकबीर:९/२४,फ़तावा हक़्क़ानिया, किताबुलअक़ाइद, मसअला तक़दीर के बारे में: १/२८८)

के सिवा कोई नहीं जानता,अलबत्ता हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़यामत की कुछ निशानियां बयान फ़र्माई हैं,उन निशानियों को देख कर क़यामत का क़रीब आ जाना मालूम हो सकता है।

उन अलामात की तीन क़िस्में है:

(१) अलामाते बईदा(दूर की अलामतें)

(२) अलामाते मुतवस्सिता जिन को अलामाते सुग़रा(छोटी अलामतें)भी कहा जाता है।

(३) अलामाते क़रीबा जिन को अलामाते कुबरा(बडी अलामतें)भी कहा जाता है।

अलामाते बईदा वह हैं जिन का ज़ुहूर काफ़ी पहले हो चुका है,उन को बईदा इसलिये कहा जाता है के उन के और क़यामत के दर्मियान निसबतन ज़ियादा फ़ासला है,मसलन:रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बिअसत,शक़्क़ुल क़मर का वाक़िया।

इन ही अलामात में से एक अलामत फ़ितनए तातार है,जिस की पेशगी ख़बर सही अहादीस में दी गई है,यह फ़ितना ६५६ हिजरी में अपने उरूज पर पहुंचा,जब के तातारियों के हाथों सुक़ूते बग़दाद का इबरत नाक हादसा पेश आया,उन्हों ने बनी अब्बास के आख़री ख़लीफ़ा मोअतसिम को क़त्ल कर डाला और आलमे इस्लाम के बेशतर ममालिक उन की ज़द में आकर ज़ेर व ज़बर हो गये,उन की सिफ़ात अहादीस में यह बयान की गई हैं के उन की आंखें छोटी,चेहरे सुर्ख़ और नाकें छोटी और चपटी होंगी,उन के चेहरे(गोलाई और मोटाई में)ऐसी ढाल के मानिंद होंगे जिस पर तह ब तह चमडा चढा दिया गया हो,वह बालों का लिबास पहनते होंगे,यह सारे सिफ़ात तातारियों पर सादिक़ आईं,जो तुर्किस्तान से क़हरे इलाही बनकर आलमे इस्लाम पर टूट पडे थे।(1)

अलामाते सुग़रा

ऐसी बहुत सी अलामात हैं,जो रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पर्दा(यानी विसाल)फ़र्माने से हज़रत महदी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के ज़ाहिर होने तक होंग। जिन में से चंद यह हैं:

(१) हक़ीक़ी इल्म का उठ जाना,जहल बढ जाना।

(1) (माअख़ज़ुहु अबूदाऊद,किताबुल मलाहिम,बाबु फ़ी क़ितालित्तुर्क:२/२३५,बिहिश्ती ज़ेवर मुकम्मल मुदल्लल सातवां हिस्सा:५७५)

(२) ज़िना और शराबनोशी का ज़ियादा होना।
(३) औरतों का जियादा होना,मर्दों का कम होना।
(४) झूटों का ज़ियादा होना।
(५) बडे बडे काम ना अहल लोगों के सुपुर्द किया जाना।
(६) दुनिया की मुसीबतों के ज़ियादा होने की वजह से लोगों का मौत की आरज़ू करना।
(७) माले ग़नीमत को अपनी मिल्क समझना।
(८) अमानत को माले ग़नीमत समझ कर दबा लेना।
(९) ज़कात को जुर्माना समझना।
(१०) इल्मे दीन दुनिया के लिये पढना।
(११) शोहर का अपनी बीवी की बात मानना और मां की नाफ़र्मानी करना।
(१२) दोस्त को क़रीब,बाप को दूर करना।
(१३) मसजिदों में शोर मचाना।
(१४) फ़ासिक़ लोगों का सरबराह होना।
(१५) बुरे आदमी का उस के शर से बचने के लिये इकराम किया जाना।
(१६) खुल्लम खुल्ला बाजे गाना,नाच रंग की ज़ियादती हो जाना।
(१७) बाद वाले लोगों का पहले लोगों पर लानत करना।
(१८) फ़ित्नों का इस तरह मुसलसल आना जिस तरह धागा टूटने से तसबीह के दाने गिरते हैं।
(१९) वक़्त में बे बरकती होना,यहां तक के साल का महीने के बराबर,महीने का हफ़्ते के बराबर,हफ़्ते का दिन के बराबर और दिन का ऐसा हो जाना जैसे कोई चीज़ आग लगते ही भडक कर फ़ौरन ख़तम हो जाये।
(२०) मुल्के अरब में खेतीयों,बागों और नहरों का होना,नहरे फ़ुरात का सोने के पहाडों वाले ख़ज़ाने खोल देना(नहरे फ़ुरात इराक़ में है)
(२१) निहायत सुर्ख़ रंग की आंधी का चलना।
(२२) ज़मीन का धंसना।
(२३) आसमान से पथ्थरों का बरसना।
(२४) चेहरों का बदल जाना।
(२५) मुलाक़ात के वक़्त बजाये सलाम के गाली गलोच बकना।
(२६) झूट को हुनर समझना।
(२७) फ़ासिक़ों का इल्म सीखना।

(२८) शर्म व हया का जाता रहना।

(२९) मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार का चारों तरफ़ से हुजूम करना।

(३०) ज़ुल्म का इस क़द्र बढ जाना के जिस से पनाह लेना मुश्किल हो।

(३१) बातिल मज़ाहिब,झूटी हदीसों और बिदअतों का फ़रोग़ पाना।

(३२) ईसाइयों की हुकूमत का ख़ैबर तक पहुंच जाना।(1)

फ़ितनों से बचने के लिये नबवी तालीमात का ख़ुलासा

(१) सब्र करना।

(२) गुनाहों से तौबा करना।

(३) अपनी इस्लाह की फ़िक्र करना।

(४) फ़ितों से यकसू होकर इबादत में लगना के उस ज़माने में इबादत का सवाब ज़ियादा है।

(५) जब अहले हक़ और अहले बातिल की पहचान मुश्किल हो तो तमाम फ़िरक़ों से अलाहिदगी इख़्तियार करना।

(६) फ़ितों से बचने की पूरी कोशिश करना,मसलन:घर से बिला ज़रूरत क़दम बाहर न निकालना।(2)

अलामाते कुबरा

यानी वह अलामात जो हज़रत महदी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के ज़ाहिर होने से सूर फूंके जाने तक होंगी।ज़ैल में उन को ब तर्तीबे ज़माना बयान किया जाता है:

अलामाते क़यामत बतर्तीबे ज़माना

क़यामत से पहले ऐसे बडे बडे वाक़िआत ज़ाहिर होंगे के लोग एक दूसरे से पूछा करेंगे के क्या इन के बारे में तुम्हारे नबी ने कुछ फ़र्माया है ?

तीस बडे बडे कज़्ज़ाब (झूटे)ज़ाहिर होंगे(बाज़ कज़्ज़ाब ज़ाहिर हो चुके) सब से बडे कज़्ज़ाब का नाम दज्जाल होगा।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दुनिया में दोबारा आने तक इस उम्मत में एक जमाअत हक़ के लिये बर सरे पैकार रहेगी जो अपने मुख़ालिफ़ीन की परवाह न करेगी,बलके दुश्मनाने इस्लाम के मुक़ाबले में डटी रहेगी।(3)

(1)हज़रत मौलाना युसूफ़ लुधयानवी शहीद रहिमहुल्लाहु तआला का रिसाला " अलामाते क़यामत "का भी मुतालआ करें के मज़ीद तफ़सीलात के लिये यह रिसाला बहुत मुफ़ीद है। इसी तरह दरसी बहिश्ती ज़ेवर में भी तफ़सील मौजूद है, उस का भी मुतालआ करें। (माअख़ज़ुहुम जामेउत्तिरमिज़ी,अबवाबुल फ़ितन,बाबु माजाअ फ़ी अशरातिस्साअति:२/४४) (2) (माअख़ज़ुहु अबूदाऊद,किताबुल फ़ितन,बाबुन्नहइ अनिस्सअइ फ़िल फ़ितनति:२/२२८ता २३०)(3) (माअख़ज़ुहु अबूदाऊद,किताबुलफ़ितन,जिक्रुलफ़ितनि व दलाइलिहा:२/२२८)

हज़रत इमाम नववी रहिमहुल्लाहु तआला की राय के मुताबिक़ यह ज़रूरी नहीं के यह पूरी जमाअत किसी ख़ास तबक़े या ख़ास इलाक़े से तअल्लुक़ रखती हो,बलके हो सकता है के यह जमाअत मुसलमानों के तमाम या अकसर तबक़ात में मुन्तशिर और मुतफ़र्रिक़ तौर पर मौजूद हो,यानी इस जमाअत के कुछ अफ़राद मसलन:मुहद्दिसीन में पाये जाते हों,कुछ फ़ुक़हा में,कुछ मुबल्लिग़ीन में,कुछ मुजाहिदीन में वग़ैरा वग़ैरा।

हज़रत महदी

इस जमाअत के आख़री अमीर हज़रत महदी रज़ियल्लाहु तआला अनहु होंगे जो नेक सीरत होंगे,रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले बैत और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अनहा की औलाद में से होंगे,आप ही के ज़माने में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ूल होगा,आप का क़द् व क़ामत क़दरे लम्बा,बदन चुस्त,रंग खुला हुवा और चेहरा हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे के मुशाबह होगा,नीज़ आप के अख़लाक़ हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूरी मुशाबहत रखते होंगे,आप का नाम मुहम्मद वालिद का नाम अब्दुल्ला,वालिदा का नाम आमिना होगा,ज़ुबान में क़दरे लुक़नत होगी, जिस की वजह से तंग दिल होकर कभी कभी रान पर हाथ मारते होंगे,आप का इल्म ख़ुदा दाद होगा।

जब लोग आप को तलाश करेंगे ताके आप उन्हें दुश्मन के पंजे से नजात दिलायें, उस वक़्त आप मदीना मुनव्वरा में तशरीफ़ फ़र्मा होंगे,मगर इस बात के डर से के लोग मुझ जैसे कमज़ोर को अमीर न बना दें,आप मक्का मुअज़्ज़मा चले जायेंगे।

उस ज़माने के औलिया-ए-किराम आप को तलाश करेंगे,बाज़ लोग महदियत के झूटे दाअवे करेंगे,जब आप रुक्न और मक़ामे इब्राहीम के दर्मियान ख़ान-ए-काबा का तवाफ़ करते होंगे,लोगों की एक जमाअत आप को पहचान लेगी और आप के हाथ पर बावुजूद आप के न चाहते हूये,बैअत कर लेगी।(इस वाक़िये की अलामत यह होगी के गुज़िश्ता माहे रमज़ान में चांद और सूरज को ग्रहन लग चुका होगा।(1)

मुसलमानों का लशकर जो अल्लाह तआला की पसंदीदा जमाअत पर मुश्तमिल होगा,हिंद का जिहाद करेगा और फ़तह याब हो कर उस के हुक्मरानों को ज़ंजीरों में जकड लायेगा।

---

(1) (अबूदाऊद,किताबुल महदी:२/२३२)

(हिंद से मुराद मौजूदा हिंदूस्तान,श्रीलंका,बंगलादेश,नेपाल और पाकिस्तान में सूबए पंजाब के बाज़ इलाक़े हैं,बाज़ मोअर्रिख़ीन के बयान के मुताबिक़ हिंद का इतलाक़ इन मुल्कों के अलावा और भी बाज़ ममालिक पर होता है)

जब यह लश्कर वापस होगा तो शाम में ईसा बिन मरयम अलैहिमुस्सलाम को पायेगा।

ख़ुरूजे दज्जाल से पहले के वाक़िआत

रूमी अअमाक़ या दाबिक़ के मक़ाम तक पहुंच जायेंगे,उन से जिहाद के लिये मदीना से मुसलमानों का एक लशकर रवाना होगा,जो उस ज़माने के बेहतरीन लोगों में से होगा।

जब दोनों लशकर आमने सामने होंगे तो रूमी अपने क़ैदी वापस मागेंगे और कहेंगे के हमारे जो आदमी क़ैद किये गये हैं और अब मुसलमान हो चुके हैं, उन्हें और हमें तन्हा छोड दो,हम उन से जंग करेंगे,मुसलमान कहेंगे के नहीं, वल्लाह!हम हर्गिज़ अपने भाइयों को तुम्हारे हवाले नहीं करेंगे,इस पर जंग होगी जंग में एक तिहाई मुसलमान फ़रार हो जायेंगे जिन को तौबा की तौफ़ीक़ ही न होगी,क्यूंके वह कुफ़्र पर मरेंगे,एक तिहाई शहीद हो जायेंगे जो बेहतरीन शहीद होंगे और बाक़ी एक तिहाई मुसलमान फ़तहयाब होंगे जो आइंदा हर क़िस्म के फ़ितने से महफ़ूज़ व मामून हो जायेंगे,फिर यह लोग कुस्तुनतुनिया फ़तह करेंगे।(1)

जब वह ग़नीमत तक़सीम करने में मश्ग़ूल होंगे तो ख़ुरूजे दज्जाल की झूटी ख़बर मशहूर हो जायेगी जिसे सुनते ही यह लशकर वहां से रवाना हो जायेगा।

फ़ाइदाः रूम से मुराद वह इलाक़ा है जिस के मशरिक़ में तुर्की और रूस,जुनूब में क़दीम शाम और मिस्र और मग़रिब में बहरे मुतवस्सित,इस्पेन और पुर्तगाल है,उस के अलावा दुनिया के वह हिस्से जहां उस इलाक़े के लोग आबाद हैं,मसलन:अमरीका,ऑस्ट्रेलिया वग़ैरा वह भी मुराद हैं।

अअमाक़ एक मक़ाम का नाम है जो दाबिक़ के क़रीब हलब व इंताक़िया के दर्मियान वाक़ेअ है,दाबिक़ एक बस्ती का नाम है जो हलब के क़रीब उज़्ज़ाज़ के इलाक़े में बताई गई है,दाबिक़ और हलब के दर्मियान चार फ़रसख़ का फ़ासला है,एक फ़रसख़ तीन मील के बराबर होता है।

(1) (माअख़ज़ुहु सही मुस्लिम,किताबुल फ़ितन,अशरातुस्साअति:२/३९१)

मदीना से मुराद मदीना मुनव्वरा भी हो सकता है और शाम का मशहूर शहर हलब भी हो सकता है और बाज़ हज़रात का ख़याल है के बैतुलमक़दिस मुराद है।

कुस्तुनतुनिया तुर्की का मशहूर शहर है,जिसे आज कल इस्तंबूल कहा जाता है।

ख़ुरूजे दज्जाल

जब यह लोग शाम पहुंचेंगे तो दज्जाल वाक़िई निकल आयेगा,इस से पहले तीन बार ऐसा वाक़िआ पेश आचुका होगा के लोग घबरा उठेंगे,ख़ुरूजे दज्जाल के वक़्त अच्छे लोग कम होंगे,बाहमी अदावतें फैली हुई होंगी,दीन में कमज़ोरी आचुकी होगी और इल्म रुख़्सत हो रहा होगा,अरब उस ज़माने में(ताअदाद या कुव्वत के एतबार से)कम होंगे,दज्जाल के अकसर पेरोकार औरतें और यहूदी होंगे।

यहूदियों की तादाद सत्तर हज़ार होगी,वह ऐसी तलवारों से मुसल्लह होंगे जिन में हीरे जवाहरात जडे हूये होंगे और उन पर साज का लिबास होगा। दज्जाल शाम और इराक़ के दर्मियान निकलेगा।

फ़ाइदा: अरब का इतलाक़ यमन,मौजूदा सऊदी अरब बशमूले खलीजी ममालिक पर होता है,उर्दुन,फ़लस्तीन,शाम,लबनान और शिमाली अफ़्रीक़ा के ममालिक में भी अरब नसल के अफ़राद आबाद हैं।इराक़ से मुराद मौजूदा इराक़ और उस के क़रीबी इलाक़े हैं।

साज बेश क़ीमत दबीज़ कपडे को कहते हैं।

दज्जाल का हुलिया

दज्जाल जवान होगा और अब्दुलउज़्ज़ा बिन क़ुतन के मुशाबेह होगा (अब्दुलउज़्ज़ा बिन क़तन क़बील–ए–ख़ुज़ाआ का एक शख़्स था जो ज़मानए जाहिलियत में मर गया था) रंग गंदुमी और बाल पेचदार होंगे,दोनों आंखें ऐबदार होंगी,बायें आंख से काना होगा,आंख में मोटी फुल्ली होगी,पेशानी पर काफ़िर इस तरह लिख्खा होगा, काफ़,फ़ा,रा, जिसे हर मोमिन पढ सकेगा, ख़्वाह लिखना जानता हो या न जानता हो।वह एक गधे पर सवारी करेगा जिस के दोनों कानों के दर्मियान सत्तर हाथ का फ़ासला होगा।(1)

दज्जाल की रफ़्तार बादल और हवा की तरह तेज़ होगी,तेज़ी से पूरी दुनिया में फिर जायेगा,जैसे ज़मीन उस के लिये लपेट दी गई हो और हर तरफ़

(1) (माख़ज़ुहु मिश्कात,किताबुल फ़ितन,बाबुलअलामात २/४७७)

फ़साद फैलायेगा,मगर मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यिबा और बैतुलमक़दिस में दाख़िल न हो सकेगा,उस ज़माने में मदीना तैय्यिबा के सात दरवाज़े होंगे (सात दरवाज़ों से बज़ाहिर सात रास्ते मुराद हैं)मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यिबा के हर रास्ते पर फ़रिश्तों का पहरा होगा जो दज्जाल को अंदर घुसने न देंगे।

वह मदीना तैय्यिबा के बाहर सुर्ख़ टिले के पास खारी ज़मीन के खतम पर और ख़ंदक़ के दर्मियान ठेहरेगा,बैरूने मदीना पर उस का ग़लबा हो जायेगा।उस वक़्त मदीना तैय्यिबा में तीन ज़लज़ले आयेंगे जो हर मुनाफ़िक़ मर्द व औरत को मदीना से निकाल फेकेंगे,यह सब मुनाफ़िक़ीन दज्जाल से जा मिलेंगे,औरतें दज्जाल की पैरवी सब से पहले करेंगी,ग़र्ज़ मदीना तैय्यिबा उन से बिलकुल पाक हो जायेगा,इस लिये उस दिन को यौमे नजात कहा जायेगा,जब लोग उसे परेशान करेंगे तो वह गुस्से की हालत में वापस होगा।(1)

फ़ितन-ए-दज्जाल

फ़ितन-ए-दज्जाल इतना सख़्त होगा के तारीख़े इन्सानी में उस से बडा फ़ितना कभी हुवा,न आइंदा होगा,इसीलिये तमाम अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम अपनी अपनी उम्मतों को उस से ख़बरदार करते रहे, मगर उस की जितनी तफ़सीलात रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताईं उतनी किसी और नबी ने नहीं बताईं,वह पहले नुबुव्वत का और उस के बाद ख़ुदाई का दावा करेगा,उस के साथ ग़िज़ा का बहुत बडा ज़ख़ीरा होगा,ज़मीन के पोशिदा ख़ज़ानों को हुक्म देगा तो वह बाहर निकल कर उस के पीछे हो जायेंगे,मादरज़ाद अंधे और बरस के मरीज़ को तन्दरुस्त कर देगा,अल्लाह तआला उस के साथ शयातीन को भेजेंगे जो लोगों से बातें करेंगे,चुनांचे दज्जाल किसी देहाती से कहेगा: अगर मैं तेरे मां बाप को ज़िंदा कर दूं तो क्या तू मुझे अपना रब मान लेगा?

देहाती वादा कर लेगा: मान लूंगा तो इस देहाती के सामने दो शैतान उस के मां बाप की सूरत में आकर कहेंगे: बेटा!तू इस की इताअत कर,यह तेरा रब है।

दज्जाल के साथ दो फ़रिश्ते दो नबियों के हम शकल होंगे,जो लोगों की आज़माइश के लिये उस को इस तरह झुटलायेंगे के सुन्नेवालों को ऐसा मालूम हो के गोया वह उस की तसदीक़ कर रहे हैं जो शख़्स दज्जाल की तसदीक़ करेगा,

(1) (माअख़ज़ुहु सहीहुल बुख़ारी,किताबुल फ़ितन,बाबु ज़िक्रिद्दज्जाल:२/१०५५,जामिउत्तिर्मिज़ी अबवाबुलफ़ितन, बाबु माजाअ फ़ी अन्नद्दज्जाल २/४९)

काफ़िर हो जायेगा और उस के पिछले तमाम नेक आमाल ज़ाया हो जायेंगे और जो उस को झुटलायेगा उस के सब गुनाह मुआफ़ हो जायेंगे।

उस का एक बडा फ़ितना यह होगा के जो लोग उस की बात मान लेंगे,उन की ज़मीनों में दज्जाल के कहने पर बादलों से बारिश होती नज़र आयेगी और उसी के कहने पर उन की ज़मीन नबातात उगायेगी,उन के मवेशी ख़ूब फ़रबा(मोटे)हो जायेंगे और मवेशियों के थन दूध से भर जायेंगे और जो लोग उस की बात न मानेंगे,उन में क़हत पडेगा और उन के सारे मवेशी हलाक हो जायेंगे।

ग़र्ज़ उस की पैरवी करने वालों के सिवा सब लोग उस वक़्त मशक़्क़त में होंगे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अलावा कोई भी उसे क़त्ल करने पर क़ादिर न होगा।

नहरों और वादियों की सूरत में उस के साथ एक जन्नत होगी और एक आग,लेकिन हक़ीक़त में जन्नत आग होगी और आग जन्नत,यानी अल्लाह तआला अपनी क़ुदरते कामिला से उस की जन्नत को बातनी तौर से आग बना देगा और आग को बातनी तौर पर जन्नत बना देगा,जो शख़्स उस की आग में गिरेगा उस का अज्र व सवाब यक़ीनी और गुनाह मुआफ़ हो जायेंगे और जो शख़्स दज्जाल पर सूरए कहफ़ की इब्तिदाई दस आयात पढ देगा,वह उस के फ़ितने से महफ़ूज़ रहेगा,हत्ता के अगर दज्जाल उसे अपनी आग में भी डाल दे तो वह उस पर ठंडी हो जायेगी,दज्जाल तलवार या आरे से एक मोमिन नौ जवान के दो टुकडे कर के अलग अलग डाल देगा,फिर उस को आवाज़ देगा तो अल्लाह तआला के हुक्म से वह ज़िंदा हो जायेगा,दज्जाल उस से पूछेगा: बता तेरा रब कौन है?

वह कहेगा: मेरा रब अल्लाह है और तू अल्लाह तआला का दुश्मन दज्जाल है,मुझे आज पहले से ज़ियादा तेरे दज्जाल होने का यक़ीन है।

दज्जाल को उस शख़्स के अलावा किसी और के मारने और ज़िंदा करने पर क़ुदरत न दी जायेगी,उस का फ़ितना चालीस रोज़ रहेगा,जिन में से पहला दिन एक साल के बराबर,दूसरा दिन एक माह के बराबर और तीसरा दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा,बाक़ी दिन हस्बे माअमूल होंगे।(1)

उस ज़माने में मुसलमानों के तीन शहर होंगे,उन में से एक तो दो समंदरो के मिलने की जगह पर होगा(बज़ाहिर इस से मुराद बहरे रूम और बहरे फ़ारिस

---

(1) (मिश्कात,अलफ़ितन,बाबुल अलामात:२/४७७)

हैं) दूसरा " हीरा " ईराक़ के मक़ाम पर और तीसरा "शाम " में।

वह मशरिक़ के लोगों को शिकस्त देगा और उस शहर में सब से पहले आयेगा जो दो समुंदरों के मिलने की जगह पर है।

फ़ाइदा: हीरा इराक़ का वह इलाक़ा है जिस के क़रीब ही सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम के दौर में शहरे कूफ़ा आबाद हुवा,यह कूफ़ा से तीन मील के फ़ासले पर वाक़ेअ है।

शाम से असल मुल्क शाम मुराद है जो तूल(लम्बाई)में दरिया–ए–फ़ुरात (इराक़)से अलअरीश तक(जहां से मिस्र शुरू होता है)और अर्ज़ (चौडाई)में जज़ीरा नुमाए अरब से बहरे रूम तक फैला हुवा था। उर्दुन, फ़लस्तीन, लबनान,मौजूदा सूरिया,दमिश्क़,बैतुलमक़दिस,तराबुल्स, अंताक़िया सब इसी के हिस्से थे।

शहर के लोग तीन गिरहों में बट जायेंगे,एक गिरोह वहीं रह जायेगा के देखें दज्जाल कौन है और क्या करता है,यह गिरोह दज्जाल की पैरवी करेगा और एक देहात में चला जायेगा,एक गिरोह अपने क़रीब वाले शहर में मुंतक़िल हो जायेगा,(बज़ाहिर इस से मुराद साहिले फ़ुरात की तरफ़ निकल जायेगा जो दज्जाल से जंग करेगा),फिर दज्जाल उस से क़रीब वाले शहर में आयेगा,उस में भी लोगों के इसी तरह तीन गिरोह हो जायेंगे और तीसरा गिरोह उस क़रीब वाले शहर में मुन्तक़िल हो जायेगा जो शाम के मग़रिबी हिस्से में होगा,यहां तक के मोमिनीन उर्दुन और बैतुलमक़दिस में जमा हो जायेंगे और दज्जाल शाम में फ़लस्तीन के एक शहर तक पहुंच जायेगा जो बाबे लुद पर वाक़ेअ होगा और मुसलमान अफ़ीक़ नामी घाटी की तरफ़ सिमट जायेंगे(यह दो मील लम्बी घाटी उर्दु ?न में वाक़ेअ है)यहां से वह अपने मवेशी चरने के लिये भेजेंगे जो सब के सब हलाक हो जायेंगे।बिलआख़िर मुसलमान बैतुलमक़दिस के एक पहाड पर महसूर हो जायेंगे जिस का नाम जबलुदुख़ान है और दज्जाल पहाड के दामन में पडाव डालकर मुसलमानों की जमाअत का मुहासरा कर लेगा,यह मुहासरा सख़्त होगा जिस के बाइस मुसलमान सख़्त मुशक़्क़त और फ़क्र व फ़ाक़ाह में मुब्तला हो जायेंगे हत्ता के बाज़ लोग अपने कमान की तांत जलाकर खायेंगे।

दज्जाल आख़री बार उर्दुन के इलाक़े में अफ़ीक़ नामी घाटी पर नुमूदार होगा,उस वक़्त जो भी अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता होगा,वह वादि–ए– उर्दुन में मौजूद होगा,वह एक तिहाई मुसलमानों को क़त्ल कर देगा और तिहाई को शिकस्त देकर भगा देगा और सिर्फ़ एक तिहाई मुसलमान बाक़ी

बचेंगे,जब मुहासरा लम्बा होगा तो मुसलमानों के अमीर इमाम महदी उन से कहेंगे के अब किस का इन्तिज़ार है?

इस सरकश से जंग करो,ताके शहादत या फ़तह में से एक चीज़ तुम को हासिल हो जाये,चुनांचे सब लोग पुख़्ता अहद कर लेंगे के सुबह होते ही नमाज़े फ़ज्र के बाद दज्जाल से जंग करेंगे।(1)

नुज़ूले ईसा अलैहिस्सलाम

वह रात सख़्त तारीक होगी और लोग जंग की तय्यारी कर रहे होंगे,सुबह की तारीकी में अचानक किसी की आवाज़ सुनाई देगी के तुम्हारा फ़रयादरस आ पहुंचा,लोग तअज्जुब से कहेंगे के यह तो किसी शिकम सेर की आवाज़ है,ग़र्ज़ नमाज़े फ़ज्र के वक़्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नाज़िल हो जायेंगे,नुज़ूल के वक़्त वह अपने दोनों हाथ दो फ़रिश्तों के कांधों पर रख़्खे हुये होंगे।(2)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का हुलिया

आप मशहूर सहाबी हज़रत उरवा बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अनहु के हम शक्ल होंगे,क़द्द व क़ामत दर्मियाना, रंग सुर्ख़ व सफ़ेद और बाल शानों तक फैले हुये सीधे साफ़ और चमक दार होंगे,जैसे ग़ुस्ल के बाद होते हैं,सर झुकायेंगे तो उस से पानी के क़तरे मोतियों की तरह टपकेंगे और जब सर उठायेंगे तो उस से ऐसे क़तरे गिरेंगे जो चांदी के दानों की तरह चमकदार और मोतियों की तरह सफ़ेद होंगे,जिस्म पर एक ज़िराह और हलके ज़र्द रंग के दो कपडे होंगे।

जिस जमाअत में आप का नुज़ूल होगा वह उस ज़माने के स्वालेह तरीन आठ सौ मर्द और चार सौ औरतों पर मुश्तमिल होगी,उन के पूछने पर आप अपना तआरुफ़ करायेंगे और दज्जाल से जिहाद के बारे में उन के जज़बात व ख़यालात मालूम फ़र्मायेंगे,उस वक़्त मुसलमानों के अमीर हज़रत महदी होंगे,जिन का ज़ुहूर नुज़ूले ईसा अलैहिस्सलाम से पहले हो चुका होगा।

मक़ामे नुज़ूल,वक़्ते नुज़ूल और हज़रत महदी

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ूल दमिश्क़ की मशरिक़ी सिम्त में सफ़ेद मिनारे के पास या बैतुलमक़दिस में हज़रत महदी के पास होगा,उस वक़्त हज़रत इमाम महदी नमाज़े फ़ज्र पढाने के लिये आगे बढ चुके होंगे और नमाज़ की इक़ामत हो चुकी होगी, हज़रत महदी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इमामत

(1) (माअख़ज़ुहु जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबुलफ़ितन,बाबुमाजाअ फ़ी फ़ितनतिद्दज्जाल:२/४८)(2) (सही मुस्लिम,किताबुल फ़ितन,ज़िक्रुद्दज्जाल:२/४००)

के लिये बुलायेंगे,मगर वह इन्कार करेंगे और फ़र्मायेंगे: यह इस उम्मत का एज़ाज़ है के इस के बाज़ लोग बाज़ के अमीर हैं जब हज़रत महदी पीछे हटने लगेंगे तो आप उन की पुश्त पर हाथ रख कर फ़र्मायेंगे: तुम ही नमाज़ पढाओ, क्यूंके इस नमाज़ की इक़ामत तुम्हारे लिये हो चुकी है।

चुनांचे उस वक़्त की नमाज़ हज़रत महदी ही पढायेंगे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी उन के पीछे पढेंगे।(1)

दज्जाल से जंग

ग़र्ज़ नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ होकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम(मस्जिद का) दरवाज़ा खुलवायेंगे जिस के पीछे दज्जाल होगा और उस के साथ सत्तर हज़ार मुसलह यहूदी होंगे,आप हाथ के इशारे से फ़र्मायेंगे: मेरे और दज्जाल के दर्मियान से हट जाओ दज्जाल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को देखते ही इस तरह घुलने लगेगा,जैसे पानी में नमक घुलता है या जैसे रांग और चरबी पिघलती है,उस वक़्त जिस काफ़िर पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की सांस की हवा पहुंचेगी मर जायेगा और जहां तक आप की नज़र जायेगी वहीं तक सांस पहुंचेगा,मुसलमान पहाड से उतर कर दज्जाल के लश्कर पर टूट पडेंगे और यहूदियों पर ऐसा रोअब छा जायेगा के अच्छा ख़ासा क़द्द व क़ामत वाला यहूदी तलवार तक न उठा सकेगा,ग़र्ज़ जंग होगी और दज्जाल भाग खडा होगा।

क़त्ले दज्जाल और मुसलमानों की फ़तह

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उस का तआकुब करेंगे और फ़र्मायेंगे: मेरी एक ज़र्ब तेरे लिये मुक़द्दर हो चुकी है जिस से तू बच नहीं सकता। उस वक़्त आप के पास दो नरम तलवारें और एक नेज़ा होगा जिस से आप दज्जाल को बाबे लुद पर क़त्ल करेंगे,पास ही अफ़ीक़ नामी घाटी होगी,नेज़ा उस के सीने के बीचो बीच लगेगा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उस का ख़ून जो आप के नेज़े पर लग गया होगा मुसलमानों को दिखायेंगे,बिल आख़िर दज्जाल के साथी यहूदियों को शिकस्त हो जायेगी और उन को मुसलमान चुन चुन कर क़त्ल करेंगे,किसी यहूदी को कोई चीज़ पनाह न देगी,हत्ता के दरख़्त और पथ्थर बोल उठेंगे: यह हमारे पीछे काफ़िर यहूदी छुपा हुवा है,आकर इसे क़त्ल कर दो। बाक़ी मान्दा तमाम अहले किताब आप पर ईमान ले आयेंगे।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और मुसलमान ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे,ताके

(१) (माअख़ज़ुहु सही मुस्लिम,किताबुल फ़ितन,बाबु ज़िक्रिद्दज्जाल:२/४००,माअख़ज़ुहु इब्ने माजा, अलफ़ितन, बाबु फ़ितनतिद्दज्जाल.अर्रक़्मु:४०७७)

नसारा की तर्दीद हो जाये जो ख़िन्ज़ीर हलाल समझ कर खाते हैं और सलीब तोड देंगे,यानी नसरानियत को मिटायेंगे।(1)

हज़रत महदी की वफ़ात

उस के बाद हज़रत महदी सात या आठ साल या नौ साल मुसलमानों के ख़लीफ़ा रह कर ४९ साल की उमर में विसाल फ़र्मायेंगे।हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आप के जनाज़े की नमाज़ पढाकर दफ़न फ़र्मायेंगे,उस के बाद तमाम छोटे बडे इन्तिज़ामात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हाथ में आ जायेंगे,आप की ख़िदमत में दूर दराज़ के लोग जो दज्जाल के धोका फ़रेब से बचे रहे होंगे,हाज़िर होंगे और आप उन को जन्नत में अज़ीम दरजात की ख़ूश ख़बरी दे कर दिलासा व तसल्ली देंगे,फिर लोग अपने अपने वतन वापस हो जायेंगे,मुसलमानों की एक जमाअत आप की ख़िदमत व सोहबत में रहेगी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मक़ाम फ़ज्जुर्रौहा में तशरीफ़ ले जायेंगे,वहां से हज या उमरा या दोनों करेंगे(फ़ज्जुर्रौहा,मदीना तय्यिबा और बद्र के दर्मियान एक मक़ाम है जो मदीना तैय्यिबा से छे मील पर वाक़ेअ है)और रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़–ए–अक़दस पर जाकर सलाम अर्ज़ करेंगे और आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन के सलाम का जवाब देंगे।

याजूज माजूज

लोग अमन व चैन की ज़िंदगी बसर कर रहे होंगे के याजूज माजूज की दीवार टूट जायेगी जो के ज़ुलक़रनैन बादशाह ने तामीर की थी,याजूज माजूज निकल पडेंगे और इतनी बडी ताअदाद में होंगे के वह हर बुलंदी से उतरेंगे और तेज़ रफ़्तारी के बाइस फिसलते हुये मालूम होंगे।
(याजूज माजूज इन्सानों ही के दो बडे बडे वहशी क़बीलों के नाम हैं)

अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को हुक्म होगा के वह मुसलमानों को कोहे तूर की तरफ़ जमा कर लें,क्यूंके याजूज माजूज का मुक़ाबला किसी के बस का न होगा,वह शहरों को रोंद डालेंगे,ज़मीन में जहां पहुंचेंगे तबाही मचा देंगे और जिस पानी पर गुज़रेंगे उसे पीकर ख़त्म कर देंगे,उन की इब्तिदाई जमाअत जब बुहैर–ए–तबरिया पर गुज़रेगी तो उस का पूरा पानी पी जायेगी और जब उन की आख़री जमाअत वहां से गुज़रेगी तो उसे देख़ कर कहेगी यहां कभी पानी का असर था,बिलआख़िर याजूज माजूज कहेंगे के अहले ज़मीन पर तो हम ग़लबा पा चुके,आओ अब आसमान वालों से जंग करें।

(1) (माअख़ज़ुहु सही मुस्लिम,किताबुल फ़ितन व अशरातुस्साअति:२/३९६)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उन के साथी उस वक़्त महसूर होंगे, ग़िज़ा की सख़्त क़िल्लत के बाइस लोगों को एक बैल का सर सौ दीनार से बेहतर मालूम होगा,यानी माल की इतनी अहमियत नहीं होगी जितनी ग़िज़ा की होगी।
फ़ाइदा: कोहे तूर मिस्र के क़रीब मदयन के पास है।

याजूज माजूज की हलाकत

लोगों की शिकायत पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम याजूज माजूज के लिये बद दुआ फ़र्मायेंगे,अल्लाह तआला उन की गर्दनों और कानों में एक कीडा और हलक़ में एक फोडा निकाल देंगे जिस से सब के जिस्म फट जायेंगे और वह सब दफ़अतन (अचानक) हलाक हो जायेंगे।उस के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उन के साथी कोहे तूर से ज़मीन पर उतरेंगे,मगर पूरी ज़मीन याजूज माजूज की लाशों की चिकनाहट और बदबू से भरी होगी जिस से मुसलमानों को तकलीफ़ होगी तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उन के साथी दुआ करेंगे,अल्लाह तआला एक हवा और लम्बी गर्दनों वाले बडे बडे परिंदे भेज देगा जो उन की लाशें उठा कर समुंदर में और जहां अल्लाह तआला चाहेगा फेंक देंगे,फिर अल्लाह तआला ऐसी बारिश बरसायेगा जो ज़मीन को धोकर आइने की तरह साफ़ कर देगी और ज़मीन अपनी असली हालत पर समरात व बरकात से भर जायेगी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बरकात

दुनिया में आप का नुज़ूल और आपका रहना,इमामे आदिल और हाकिमे मुन्सिफ़ की हैसियत से होगा,इस उम्मत में आप रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा होंगे,चुनांचे आप कुरआन व हदीस और इस्लामी शरीअत पर ख़ुद भी अमल करेंगे और लोगों को भी इस पर चलायेंगे और नमाज़ों में लोगो की इमामत करेंगे।

आप का नुज़ूल इस उम्मत के आख़री दौर में होगा,नुज़ूल के बाद दुनिया में चालीस(४०) साल क़ियाम करेंगे,इस्लाम के दौरे अव्वल के बाद यह इस उम्मत का बेहतरीन दौर होगा,आप के साथियों को अल्लाह तआला जहन्नम की आग से महफ़ूज़ रख़्खेंगे और जो लोग अपना दीन बचाने के लिये आप से जा मिलेंगे,वह अल्लाह तआला के नज़दीक सब से ज़ियादा महबूब होंगे,उस ज़माने में इस्लाम के सिवा दुनिया के तमाम अदयान व मज़ाहिब मिट जायेंगे और दुनिया में कोई काफ़िर बाक़ी न रहेगा।

इसलिये जिहाद मौक़ूफ़ हो जायेगा और न ही ख़िराज वुसूल किया जायेगा और न ही जिज़या। माल व ज़र लोगों में इतना आम कर देंगे के माल को कोई

क़बूल न करेगा,ज़कात व सदक़ात का लेना ख़तम हो जायेगा,क्यूंके सब मालदार होंगे,ज़कात लेने वाला कोई न होगा,लोग ऐसे दीनदार हो जायेंगे के उन के नज़दीक एक सजदा दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर होगा,सात साल तक किसी भी दो के दर्मियान अदावत न पाई जायेगी,सब के दिलों से बुख़्ल,कीना, बुग़्ज़ व हसद निकल जायेगा,चालीस साल तक न कोई मरेगा,न बीमार होगा, हर ज़हरीले जानवर का ज़हर निकाल लिया जायेगा,सांप और बिच्छू भी किसी को ईज़ा न देंगे,बच्चे सांपो के साथ खेलेंगे,यहां तक के बच्चा अगर सांप के मुंह में भी हाथ देगा तो वह उसे नुक़सान न पहुंचायेगा।

दरिंदे भी किसी को कुछ न कहेंगे,आदमी शेर के पास से गुज़रेगा तो शेर नुक़सान न पहुंचायेगा,हत्ता के कोई लडकी शेर के दांत खोल कर देखेगी तो वह उसे कुछ न कहेगा,ऊंट शेरों के साथ,चीते गायों के साथ और भेडिये बकरियों के साथ चरेंगे,भेडिया बकरियों के साथ ऐसा रहेगा जैसे कुत्ता रेवड की हिफ़ाज़त के लिये रहता है।

ज़मीन की पैदावारी सलाहियत इतनी बढ जायेगी के बीज ठोस पथ्थर में भी बोया जायेगा तो उग आयेगा,हल चलाये बग़ैर भी एक, मुद्द से सात सौ मुद्द गंदुम पैदा होगा,एक अनार इतना बडा होगा के उसे एक जमाअत खायेगी और उस के छिलके के नीचे लोग साया हासिल करेंगे,दूध में इतनी बरकत होगी के दूध देने वाली एक ऊंटनी लोगों की बहुत बडी जमाअत को,एक गाय पूरे क़बीले को और एक बकरी पूरी बिरादरी को काफ़ी होगी,ग़र्ज़ नुज़ूले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद ज़िंदगी बडी ख़ूशगवार होगी।(1)

फ़ाइदा: मुद्द एक पैमाना है जो अहदे रिसालत में राइज था,हमारे वज़न के हिसाब से उस का वज़न तेराह छटांग तीन माशा और तीन तोला होता है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का निकाह और औलाद

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नुज़ूल के बाद दुनिया में निकाह फ़र्मायेंगे और आप की औलाद भी होगी,निकाह के बाद दुनिया में आप का क़ियाम उन्नीस साल होगा और कुल मुद्दते क़ियाम चालीस साल होगी।

आप की वफ़ात और जानशीन

उस के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात हो जायेगी और मुसलमान नमाज़े जनाज़ा पढकर आप को दफ़न करेंगे,हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दफ़न किया जायेगा,लोग हज़रत

(1) (माअख़ज़ुहु,सही मुस्लिम,किताबुल फ़ितन..बाबु ज़िक्रिद्दज्जाल:२/४००ता ४०३)

ईसा अलैहिस्सलाम की वसियत के मुताबिक़ क़बिल–ए–बनी तमीम के एक शख़्स को जिस का नाम मुक़अद होगा ख़लीफ़ा मुक़र्रर करेंगे,फिर मुक़अद का भी इंतिक़ाल हो जायेगा।

मुतफ़र्रिक़ अलामाते क़यामत

आप के बाद अगर किसी की घोडी बच्चा देगी तो क़यामत तक उस पर सवारी की नौबत नहीं आयेगी(मुमकिन है के उस की वजह यह हो के दूसरी क़िस्म की सवारियों का रिवाज होगा या यह मुराद हो के जिहाद के लिये सवारी न होगी,क्यूंके जिहाद क़यामत तक मुन्क़तेअ रहेगा)

ज़मीन में धंस जाने के तीन वाक़िआत होंगे,एक मशरिक़ में,एक मग़रिब में और एक जज़िर–ए–अरब में,जिन में मुन्किरीने तक़दीर हलाक हो जायेंगे।

धुंवा

एक ख़ास धुंवा ज़ाहिर होगा जो लोगों पर छा जायेगा,उस से मोमिनीन को तो ज़ुकाम सा महसूस होगा,मगर कुफ़्फ़ार के सर ऐसे हो जायेंगे जैसे उन्हें आग पर भून दिया गया हो।

आफ़ताब का मग़रिब से तुलूअ होना

क़यामत की एक अलामत यह होगी के एक रोज़ आफ़ताब मशरिक़ के बजाये मग़रिब से तुलूअ होगा,जिसे देखते ही सब काफ़िर ईमान ले आयेंगे,मगर उस वक़्त उन का ईमान लाना क़बूल न किया जायेगा और गुनेहगार मुसलमानों की तौबा भी उस वक़्त क़बूल न होगी।

दाब्बतुल अर्ज़(ज़मीन का जानवर)

दूसरे रोज़ लोगों में इसी बात का चर्चा हो रहा होगा के सफ़ा पहाड ज़लज़ले से फट जायेगा जिस में से एक अजीब शक्ल का जानवर बरआमद होगा,इस जानवर के निकलने की अफ़वाह इस से पहले दो मर्तबा यमन और नज्द में मशहूर हो चुकी होगी,बलिहाज़े शक्ल यह हस्बे ज़ैल सात जानवरों से मुशाबहत रखता होगा:

(१) चहरे में आदमी से।

(२)पांव में ऊंट से।

(३) गर्दन में घोडे से।

(४) दुम में बैल से।

(५) सूरीन में हिरन से।

(६) सींगों में बाराह सींगे से।

(७) हाथों में बंदर से।

यह लोगों से साफ़ और सलीस ज़ुबान में बातें करेगा,उस के एक हाथ में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा और दूसरे में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की अंगूठी होगी,तमाम शहरों में ऐसी तेज़ी के साथ दौडा करेगा के कोई इन्सान उस का पीछा न कर सकेगा और कोई भागने वाला उस से बच न सकेगा,हर शख़्स पर निशान लगाता जायेगा,अगर वह साहिबे ईमान है तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा से उस की पेशानी पर एक नूरानी ख़त खींच देगा जिस की वजह से उस का तमाम चेहरा मुनव्वर हो जायेगा,अगर वह साहिबे ईमान नहीं है तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की अंगूठी से उस की नाक या गर्दन पर सियाह मुहर लगायेगा जिस की वजह से उस का तमाम चेहरा बे रौनक़ हो जायेगा,यहां तक के अगर एक दस्तरख़्वान पर चंद आदमी जमा हो जायेंगे तो हर एक के कुफ़्र व ईमान में बख़ूबी इम्तियाज़ हो सकेगा। इस जानवर का नाम दाब्बतुल अर्ज़ है जो इस काम से फ़ारिग़ हो कर गाइब हो जायेगा,आफ़ताब के मग़रिब से तुलूअ और दाब्बतुल अर्ज़ के ज़ाहिर होने से सूर फूंके जाने तक एक सौ बीस(१२०)साल का अरसा होगा।

हबशियों का ग़लबा और ख़ान-ए-काबा को ढाना

उस के बाद हबशा के काफ़िरों का ग़लबा होगा और ज़मीन पर उन की सल्तनत होगी,वह ख़ान-ए-काबा को एक एक ईंट करके तोड देंगे।

यमन की आग

यमन में अदन के इलाक़े से एक आग ज़मीन के घहराई से निकलेगी जो लोगों को महशर(शाम)की तरफ़ हांक कर ले जायेगी और मोमिनीन को मुल्के शाम में जमा कर देगी।(1)

मुक़अद की मौत के बाद तीस साल गुज़रने न पायेंगे के कुरआने करीम लोगों के सीनों और कुरआने करीम के नुस्ख़ों से उठा लिया जायेगा,पहाड अपने मरकज़ों से हट जायेंगे,उस के बाद रूहों को क़ब्ज़ किया जायेगा,याने क़यामत आ जायेगी।(2)

मोमिनीन की मौत और क़यामत

एक ख़ूशगवार हवा आयेगी जो तमाम मोमिनीन की रूहें क़ब्ज़ कर लेगी,कोई मोमिन दुनिया में बाक़ी न रहेगा,सिर्फ़ बदतरीन लोग रहेंगे जो गधों की तरह खुल्लम खुल्ला ज़िना किया करेंगे,पहाड धुन दिये जायेंगे,ज़मीन चमडे की

(1) (माअख़ज़ुहु अबूदाऊद,किताबुल मलाहिम,बाबु अमारातिस्साअति:२/२३६) (2) क़यामत की मज़ीद तर्तीबवार तफ़सीलात के लिये मुफ़्ती-ए-आज़म पाकिस्तान हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफीअ उस्मानी साहब मुद्द ज़िल्लहुम की किताब अलामाते क़यामत और नुज़ूले मसीहफ्फ़का मुतालआ फ़र्मायें।

तरह फैलाकर सीधी कर दी जायेगी,उस के बाद क़यामत का हाल पूरे दिनों की उस गाभन ऊंटनी की तरह होगा जिस के मालिक हर वक़्त इस इन्तिज़ार में हों के दिन रात में न मालूम कब बच्चा जन दे,बिलआख़िर इन ही बततरीन लोगों पर क़यामत आ जायेगी।

सूर का फूंका जाना

जब दुनिया में कोई अल्लाह अल्लाह कहने वाल बाक़ी न रहेगा तो अल्लाह तआला के हुक्म से सूर फूंका जायेगा,सूर बिगल की तरह एक चीज है,हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को जब अल्लाह तआला हुक्म फ़र्मायेंगे उस को मूंह से बजायेंगे।(1)

लोग उस वक़्त ऐश व आराम में होंगे कोई किसी काम में,कोई किसी में मसरूफ़ होगा के सुबह ही लोगों के कान में एक बारीक आवाज़ आयेगी,लोग हैरान व परेशान होंगे के यह कैसी आवाज़ है,आहिस्ता आहिस्ता वह आवाज़ बुलंद होती जायेगी, यहां तक के कडकदार हो जायेगी,उस की आवाज़ की शिद्दत से हर चीज़ फ़ना हो जायेगी और लोगों पर एक बेहोशी तारी हो जायेगी, फिर आहिस्ता आहिस्ता आवाज़ और ज़ियादा होने लगेगी जिस की वजह से बाहर के वहशी जानवर शहरों में आ जायेंगे और शहरों के लोग घबराहट में जंगल में निकल जायेंगे,फिर आवाज़ और ज़ियादा सख़्त होगी तो आसमान के तारे,चांद और सूरज टूटकर गिर पडेंगे और आसमान फटकर टूकडे टूकडे हो जायेगा और ज़मीन भी ख़त्म हो जायेगी। इब्लीस और फ़रिश्ते भी मर जायेंगे, सब से आख़िर में अर्श, कुर्सी, लौह, .कलम, बहिश्त, दोज़ख़, अरवाह और सूर भी थोडी देर के लिये फ़ना हो जायेंगे।

सिवाये अल्लाह तआला के कोई न रहेगा

जब अल्लाह तआला के सिवा कोई बाक़ी न रहेगा तो अल्लाह तआला फ़र्मायेंगे: कहां हैं बादशाह,किस के लिये आज की सलतनत है?
फिर ख़ुद ही इर्शाद फ़र्मायेंगे: एक अल्लाह की है जो क़ाहिर है। एक वक़्त तक अल्लाह तआला की ज़ात ही रहेगी।

मरने के बाद का बयान

मरने के बाद हर इन्सान को उस के अमल के मुताबिक़ जज़ा व सज़ा मिलेगी,जज़ा व सज़ा का एक मरहला मरने के बाद से क़यामत तक का है और यह इब्तिदाई मरहला है,चुनांचे रसूले अकरम स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

(1) (जामिउस्सग़ीर,हर्फ़ुस्स्वाद:२/३०७,रक़म:४९८३)

फ़र्माया: जो शख़्स मर गया उस की क़यामत तो क़ाइम होगई। (1)
इस मरहले में जज़ा व सज़ा पूरी नहीं होती।

बरज़ख़ी ज़िंदगी पर ईमान लाना

रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया:
जब नाअश(चारपाई वग़ैरा पर)रख दी जाती है और उस के बाद क़ब्रस्तान ले जाने के लिये उसे लोग उठाते हैं तो अगर वह नेक था तो कहता है: मुझे जल्दी ले चलो। और अगर वह नेक न था तो घर वालों से कहता है: हाय मेरी बरबादी,मुझे कहां ले जाते हो?

(फिर फ़र्माया)इन्सान के सिवा हर चीज़ उस की आवाज़ सुनती है,अगर इन्सान उस की आवाज़ सुन ले तो ज़रूर बेहोश हो जाये। (2)

रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया:

मुर्दे की हड्डियां तोडना ऐसा ही है जैसे ज़िंदगी में उस की हड्डी तोड दी जाये। (3)

एक मर्तबा आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी हज़रत अम्र बिन हज़्म रज़ियल्लाहु तआला अनहु को क़ब्र से तकिया लगाये हुये बैठा देख कर फ़र्माया:

इस क़ब्र वाले को तकलीफ़ न दो। (4)

हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात से वाज़ेह तौर पर मालूम होता है,के मरने वाले को अगरचे हम मुर्दा समझते हैं,लेकिन हक़ीक़त में वह अपने रब के पास ज़िंदा होता है,अगरचे उस की ज़िंदगी हमारी इस ज़िंदगी से मुख़्तलिफ़ होती है।

बरज़ख़ी ज़िंदगी क़ब्र के साथ ख़ास नहीं,बलके मौत के फ़ौरन बाद से क़यामत क़ाइम होने तक हर शख़्स पर जो ज़माना गुज़रता है उस को बरज़ख़ कहा जाता है,ख़्वाह उसे क़ब्र में रख़्खा गया हो या न रख़्खा गया हो,बलके अगर उस को जला दिया जाये या समुंदर में बहा दिया जाये,तब भी वह आलमे बरज़ख़ में होता है और वहां चूंके उस में समझ व शुऊर होता है,लिहाज़ा वह अपने आमाल के मुताबिक़ राहत में होता है या तकलीफ़ में मुब्तला होता है।

नेक आदमी की मौत क़ाबिले रश्क होती है

(1) (हाशिया सहीहुल बुख़ारी,अर्रिकाक़,बाबु सकरातिलमौत:२/९६४)(2) (सही बुख़ारी,अलजनाइज़ बाबुक़ौलिल मय्यिति वहुव अलल जनाज़ति..रक़म:१३१६)(3) (सुनन अबीदाऊद,अलजनाइज़,बाबुन फ़िलहिफ़ारि यजिदुलअज़्म.रक़म:३२०७)(4) (मिश्कात,किताबुल जनाइज़,बाबु दफ़्निल मय्यिति, अलफ़स्लुस्सालिस:१/१४९)

हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा फ़र्माते हैं:

हम रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक अन्सारी के जनाज़े में क़ब्रस्तान गये,जब क़ब्र तक पहुंचे तो देखा के अभी लहद नहीं बनाई गई है,इस वजह से नबी–ए–करीम स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठ गये और हम भी आप के आस पास(बाअदब)इस तरह बैठ गये के जैसे हमारे सरों पर परिंदे बैठे हैं (यानी इस तरह ख़ामोश दम बख़ुद होकर बैठ गये जैसा के हम में हरकत ही न रही,परिंदा हरकत न करने वाली चीज़ पर बैठता है)रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ मुबारक में एक लकडी थी,जिस से ज़मीन कुरेद रहे थे(जैसे कोई ग़मगीन किया करता है)आप ने सर मुबारक उठाकर फ़र्माया:

क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो। दो तीन मर्तबा यही फ़र्माया फिर फ़र्माया: बिला शुबह जब मोमिन बंदा दुनिया से जाता है और आख़िरत का रुख़ करता है तो उस के पास आसमान से फ़रिश्ते आते हैं जिन के सुफ़ैद चेहरे सूरज की तरह रोशन होते हैं,उन के साथ जन्नती कफ़न होता है और जन्नत की ख़ुशबू होती है,यह फ़रिश्ते जहां तक उस की नज़र पहुंचे वहां तक बैठ जाते हैं,फिर मलकुल मौत तशरीफ़ लाते हैं,यहां तक के उस के सर के पास बैठ जाते हैं और फ़र्माते हैं:

ऐ पाकीज़ा रूह!अल्लाह की मग़्फ़िरत और उस की रज़ामंदी की तरफ़ निकल कर चल चुनांचे उस की रूह इस तरह सहूलत से निकल आती है जैसे मश्कीज़े मे से(पानी का)क़तरा बहता हुवा बाहर आ जाता है,मलकुलमौत उसे ले लेते हैं,उन के हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते(जो दूर तक बैठे होते हैं)पल भर भी उन के हाथ में नहीं छोडते,यहां तक के उसे ले कर उसी कफ़न और ख़ुशबू में रख कर आसमान की तरफ़ चल देते हैं,ज़मीन पर जो कोई भी उमदह से उमदह ख़ुशबू मुश्क की पाई गई है,इस जैसी वह ख़ुशबू होती है,फिर उस रूह को ले कर फ़रिश्ते(आसमान की तरफ़)चढने लगते हैं और फ़रिश्तों की जिस जमाअत पर भी उन का गुज़र होता है,वह कहते हैं: कौन सी पाकीज़ा रूह है?

वह उस का अच्छे से अच्छा नाम ले कर जवाब देते हैं जिस से उसे दुनिया में बुलाया जाता था के फ़ुलां का बेटा फ़ुलां है इसी तरह पहले आसमान तक पहुंचते हैं और आसमान का दरवाज़ा खुलवाते हैं,दरवाज़ा खोल दिया जाता है(और फिर वह उस रूह को लेकर ऊपर चले जाते हैं),यहां तक के सातवें आसमान पर पहुंच जाते हैं,हर आसमान के मुअज़्ज़ज़ फ़रिश्ते दूसरे आसमान

तक उसे रुख़्सत करते हैं(जब सातवें आसमान तक पहुंच जाते हैं)तो अल्लाह तआला फ़र्माते हैं:

मेरे बंदे की किताब इल्लिय्यीन में लिख दो और उसे ज़मीन पर वापस ले जाओ,क्यूंके मैं ने इन्सान को ज़मीन ही से पैदा किया है और उसी में उस को लौटा दूंगा,उसी से उस को दोबारा निकालूंगा।

चुनांचे उस की रूह उस के जिस्म में वापस कर दी जाती है,उस के बाद दो फ़रिश्ते उस के पास आते हैं,जो आकर उसे बिठाते हैं,उस से सुवाल करते हैं: तेरा रब कोन है ?

वह जवाब देता है: मेरा रब अल्लाह है फिर उस से पूछते हैं: तेरा दीन क्या है ?

वह जवाब देता है: मेरा दीन इस्लाम है फिर उस से पूछते हैं: यह साहिब कोन हैं जो तुम्हारे पास भेजे गये ?

वह कहता है: वह अल्लाह के रसूल हैं फिर उस से पूछते हैं: तेरा इल्म क्या है ?

वह कहता है: मैने अल्लाह की किताब पढी,मैं उस पर ईमान लाया और उस की तसदीक़ की। उस के बाद(अल्लाह तआला की तरफ़ से)एक मुनादी आसमान से आवाज़ देता है: मेरे बंदे ने सच कहा है,उस के लिये जन्नत के बिछोने बिछा दो और उस को जन्नत के कपडे पहना दो और उस के लिये जन्नत की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो।

चुनांचे जन्नत की तरफ़ दरवाज़ा खोल दिया जाता है जिस के ज़रीये जन्नत का आराम और उस की ख़ुशबू आती रहती है और उस की क़ब्र जहां तक उस की नज़र पहुंचे,कुशादह कर दी जाती है,उस के बाद निहायत ख़ूबसूरत चेहरे वाला बेहतरीन लिबास वाला(और)पाकीज़ा ख़ुशबू वाला एक शख़्स उस के पास आकर कहता है:

ख़ूशख़बरी सुन लो,यह तुम्हारा वह दिन है जिस का तुम से वाअदा किया जाता था।

वह कहता है: तुम कोन हो ? तुम्हारा चेहरा हक़ीक़त में चेहरा कहने के लाइक़ है और इस लाइक़ है के अच्छी ख़बर लाये।

वह कहता है: मैं तुम्हारा नेक अमल हूं।

उस के बाद वह(ख़ूशी में)कहता है: ऐ रब! क़यामत क़ाइम फ़र्मा, ऐ रब! क़यामत क़ाइम फ़र्मा,ताके मैं अपने माल और अहल व अयाल के पास पहुंच जाऊं (उस से मुराद जन्नत की हूरें और निअमतें हैं)।

काफ़िर की मौत आते ही ना कामियां शुरू हो जाती हैं

जब काफ़िर बंदा दुनिया से जाता है और आख़िरत का रुख़ करता है तो सियाह चेहरों वाले फ़रिश्ते आसमान से उस के पास आते हैं,जिन के पास टाट होते हैं,और वह उस के पास इतनी दूर तक बैठ जाते हैं जहां तक उस की नज़र पहुंचती है,फिर मलकुल मौत तशरीफ़ लाते हैं,यहां तक के उस के सर के पास बैठ जाते हैं,फिर कहते हैं:

ऐ ख़बीस जान! अल्लाह की नाराज़गी की तरफ़ निकल,मलकुलमौत का यह फ़र्मान सुन कर रूह उस के जिस्म में इधर उधर भागती फिरती है,मलकुलमौत उस की रूह को जिस्म से इस तरह निकालते हैं,जैसे बोटियां भूनने की सीख़ भीगे हूये ऊन से साफ़ की जाती है(यानी काफ़िर की रूह को जिस्म से ज़बरदस्ती इस तरह निकालते हैं जैसे भीगा हुवा ऊन कांटे और सीख़ पर लिपटा हुवा हो और उस को ज़ोर से खींचा जाये)फिर उस रूह को मलकुलमौत(अपने हाथ में)ले लेते हैं और उन के हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते पलक झपकने के बराबर भी उन के पास नहीं छोडते,फ़ौरन उन से ले कर उसे टाटों में लपेट लेते हैं और टाटों में ऐसी बदबू आती है जैसे कभी किसी बदतरीन सडी हुई मुर्दा लाश से रूये ज़मीन पर बदबू फूटी हो,वह फ़रिश्ते उसे ले कर आसमान की तरफ़ चढते हैं और फ़रिश्तों की जिस जमाअत पर भी पहुंचते हैं वह कहते हैं: कोन सी ख़बीस रूह है? वह उस का बुरे से बुरा नाम ले कर कहते हैं जिस से वह दुनिया में बुलाया जाता है के फुलां का बेटा फुलां है,यहां तक के वह उसे ले कर पहले आसमान तक पहुंचते हैं और दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं,मगर उस के लिये दरवाज़ा नहीं खोला जाता,फिर अल्लाह तआला फ़र्माते हैं: इस को किताब सिज्जीन में लिख दो। जो सब से नीची ज़मीन में है,चुनांचे उस की रूह (वहीं से)फेंक दी जाती है,फिर उस की रूह को उस के जिस्म में लौटा दिया जाता है और उस के पास दो फ़रिश्ते आते हैं,उसे बिठाते हैं और पूछते हैं: तेरा रब कोन है?

वह कहता है: हाय हाय मुझे पता नहीं फिर उस से पूछते हैं: तेरा दीन क्या है?

वह कहता है: हाय हाय मुझे पता नहीं फिर उस से पूछते हैं: यह शख़्स कोन हैं जो तुम में भेजे गये?

वह कहता है: हाय हाय मुझे पता नहीं

फिर यह सुवालात व जवाबात हो जाते हैं तो आसमान से एक पुकारने वाला आवाज़ देता है: उस ने झूट कहा (क्यूंके उसे रब की ख़बर है,लेकिन यह उस को मानता न था और जिस दिन पर था,उस का भी इल्म है और हज़रत

मुहम्मद स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का भी इल्म है,लेकिन अज़ाब से बचने के लिये अपने को नादान ज़ाहिर कर रहा है)उस के नीचे आग बिछा दो और उस के लिये दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो

चुनांचे दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और दोज़ख़ की तपिश और सख़्त गर्म लू आती रहती है और क़ब्र उस पर तंग कर दी जाती है,यहां तक के उस की एक तरफ़ की पसलियां दूसरी तरफ़ की पसलियों में चली जाती हैं और उस के पास एक शख़्स आता है जो बद सूरत और बुरे कपडे पहने हुये होता है,उस के जिस्म से बुरी बदबू आती है,वह शख़्स उस से कहता है: मुसीबत की ख़बर सुन ले,यह वह दिन है जिस का तुझ से वाअदा किया जाता था।

मुर्दा कहता है: तू कोन है,तेरा निहायत बुरा चेहरा बुराई लाता है ?

वह कहता है: मैं तेरा बुरा अमल हूं। यह सुन कर वह(इस डर से के मैं क़यामत में यहां से ज़ियादा अज़ाब में गिरिफ़्तार हूंगा)यूं कहता है: ऐ रब! क़यामत क़ाइम न कर। (1)

मौत के बाद ज़िंदा होने पर ईमान और उस की तफ़सीलात

जज़ा व सज़ा का दूसरा मरहला क़यामत के दिन से न ख़तम होने वाली ज़िंदगी तक है,इस मरहले को हशर कहते हैं,इस में पूरी पूरी जज़ा व सज़ा होगी।

मौत के बाद ज़िंदा होने पर ईमान लाने का मतलब यह है के मरने के बाद सब को क़यामत के दिन दोबारा ज़िंदा कर के उठाया जायेगा।पहले सूर के बाद जब तक़रीबन चालीस साल का अरसा गुज़र जायेगा तो हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुक्म से दोबारा सूर फूंकेंगे,एक बारिश बरसेगी क़ब्र से सब्ज़ह की तरह हर जानदार,जिस्म के साथ ज़िंदा होगा।(2)

सब से पहले हमारे नबी स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने क़ब्रे मुबारक से उठेंगे,आप के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उठेंगे,फिर जगह जगह से अंबिया,सिद्दीक़ीन,शुहदा,स्वालिहीन उठेंगे,फिर आम मोमिनीन फिर फ़ासिक़ीन फिर काफ़िरीन थोडी थोडी देर बाद उठेंगे।नबी–ए–अकरम स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया:मैं क़यामत के दिन अबूबक्र और उमर के साथ उठूंगा,फिर मैं बक़ीअ(क़ब्रस्तान)आवूंगा और वहां से और लोग मेरे साथ होंगे,उस के बाद मेरे पास मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरह के लोग आयेंगे।

हर शख़्स जिस हाल में मरा है उस में उठेगा,शहीदों के ज़ख़्मों से ख़ून बहता

(१) (मुसनदे अहमद:४/८७,रक़म:१८०६३)(२) (माअख़ज़ुहु सही मुस्लिम,अलफ़ितन व अशरातुस्साअह,बाबु बैनन्नफ़हतैन:२/२०६)

हूवा होगा,उस की ख़ुशबू ज़ाअफ़रान जैसी होगी और जो हज करते हूये मरा होगा,वह लब्बैक कहता हुवा उठेगा,हर शख़्स बरहना बे ख़तना उठेगा।सब से पहले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जन्नत का सुफ़ैद जोडा पहनाया जायेगा,उस के बाद रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन से बेहतर जोडा पहनाया जायेगा, लोगों में से कोई पैदल कोई सवार मैदाने हशर में जायेगा,बाज़ तन्हा सवार होंगे,किसी सवारी पर दो किसी पर तीन,किसी पर चार,किसी पर दस सवार होंगे।काफ़िर मुंह के बल चलता हुवा मैदाने हशर में पहुंचेगा,काफ़िर को फ़रिश्ते घसीट कर ले जायेंगे,किसी को आग हंकाकर लायेगी,काफ़िर गूंगे,बहरे और अंधें उठाये जायेंगे।हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा अलहिस्सलाम के दर्मियान होंगे, रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत आप के पास और दीगर उम्मतें अपने अपने नबियों के पास जमा हो जायेंगी,ख़ौफ़ की शिद्दत की वजह से सब की आंखें आसमान की तरफ़ लगी होंगी,कोई शख़्स किसी की शर्मगाह पर नज़र नहीं डाल सकेगा,अगर डाले भी तो वह बच्चों की तरह शहवानी जज़बात से ख़ाली होगा।

आफ़ताब एक मील के फ़ासले पर होगा जिस की गर्मी से दिमाग़ उबलने लगेगा और इस कसरत से पसीना निकलेगा के सत्तर(७०)गज़ ज़मीन में जज़्ब हो जायेगा,फिर जब ज़मीन पसीना न पी सकेगी तो पसीना ऊपर की तरफ़ चढेगा,अंबिया और नेक बख़्त मोमिनों के तो सिर्फ़ तलवे तर होंगे,आम मोमिनीन में से किसी का पसीना एडियों तक,किसी का टख़नों तक,किसी का आधा पिंडली तक,किसी का घुटनों तक,किसी का कमर तक,किसी का सीने तक,किसी का गले तक होगा,काफ़िर का पसीना तो मुंह तक चढ कर लगाम की तरह उसे जकड लेगा।भूक प्यास की वजह से लोग मजबूर हो कर ख़ाक फांकने लगेंगे,आफ़ताब की गर्मी के अलावा और भी निहायत तरसनाक और होलनाक उमूर पेश आयेंगे,हर गुनेहगार अपने गुनाह के बक़द्र तकलीफ़ में मुब्तला होगा,एक हज़ार साल की मिक़दार तक लोग इन्ही तकालीफ़ व मसाइब में मुब्तला रहेंगे(1)

सात मुंदर्जए ज़ैल गिरहों को अर्श के साये में जगह दी जायेगी:

(१) आदिल बादशाह।

(२) नौ जवान आबिद।

---

(1) (माअख़ज़ुहु जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़तुल क़ियामति..बाबु माजाअ फ़ी शानिल हिसाबि. अर्रक़्म:२४२१)

(३) वह शख़्स जो मसजिद से दिली लगाओ रख्खे।
(४) वह शख़्स जो तनहाई में अल्लाह तआला को याद कर के रोये और उस के आंसू बहने लगें।
(५) वह दो शख़्स जिन की आपस में मोहब्बत सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिये हो,उसी बिना पर मिलते हों और उसी बिना पर जुदा होते हों।
(६) वह शख़्स जो अल्लाह तआला के रास्ते में इस तरह ख़ैरात करे के अल्लाह तआला के सिवा किसी को इल्म न हो।
(७) वह शख़्स जिस को मालदार,ख़ूबसूरत औरत बुराई के लिये बुलाये और वह इन्कार कर दे।(1)

क़यामत का दिन पचास हज़ार साल का है,लेकिन अल्लाह तआला के ख़ास बंदो के लिये वह दिन इतना हलका कर दिया जायेगा जितने वक़्त में फ़र्ज़ नमाज़ अदा की जाती है,बलके उस से भी कम।

शफ़ाअत पर ईमान और उस की तफ़सीलात

शफ़ाअत पर ईमान लाने का मतलब यह है के क़यामत के रोज़ सब लोग निहायत परेशानी की हालत में सिफ़ारिश करवाने के लिये सब से पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पास,फिर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास,फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास,फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास,और फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास जायेंगे,हर नबी दूसरे नबी के पास भेजते रहेंगे और ख़ुद सिफ़ारिश करने से माज़िरत करते रहेंगे,यहां तक के तमाम लोग सब से आख़िर में हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आयेंगे तो आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्मायेंगे:

हां! मैं इस के लिये मुक़र्रर हूं,मैं अपने रब से इजाज़त मांगूगा तो मुझे इजाज़त मिल जायेगी(रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सिफ़ारिश करने की फ़ज़ीलत अता हो चुकी है,लेकिन फिर भी अल्लाह तआला की बडाई की वजह से शफ़ाअत की इजाज़त मांगेंगे)फिर आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सजदे में गिर कर अल्लाह तआला की बहुत तारीफ़ करेंगे,अल्लाह तआला आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत की इजाज़त अता फ़र्मा देंगे, उसी को मक़ामे महमूद कहते हैं,जो रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हासिल होगा,यह शफ़ाअत मैदाने हशर की शिद्दत और दहशत को कम करने और हिसाब व किताब शुरू होने के लिये होगी,तमाम लोग आप स्वल्लल्लाहु

(1) (सही बुख़ारी,किताबुज़्ज़कात,बाबुस्सदक़ति बिलयमीनि,रक़्मुन:१४२३)

अलैहि व सल्लम की तारीफ़ करेंगे।

यह पहली शफ़ाअत होगी जिस को शफ़ाअते कुबरा कहते हैं।

दूसरी शफ़ाअत हिसाब और सुवाल में सहूलत हो जाने के लिये होगी के उन को हिसाब के बग़ैर ही जन्नत में दाख़िल किया जाये।

तीसरी शफ़ाअत बाज़ गुनेहगारों पर अज़ाब का हुक्म जारी होने के बाद होगी के इन का क़ुसूर मुआफ़ कर दिया जाये और जहन्नम में न डाला जाये।

चौथी शफ़ाअत बाज़ गुनेहगार जो जहन्नम में दाख़िल होंगे उन को दोज़ख़ से निकालने के लिये होगी।

पांचवी शफ़ाअत बाज़ अहले ईमान के दर्जे बुलंद होने के लिये होगी के इस मोमिन को उस से बढकर दर्जा दिया जाये,यह शफ़ाअत की पांच क़िस्में हूईं जो अहादीस से साबित हैं और सब हक़ हैं।

आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक झंडा दिया जायेगा जिस को लिवाए हम्द (तारीफ़ का झंडा)कहते हैं,हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर क़यामत तक के तमाम मोमिनीन इसी के नीचे होंगे,उस दिन हर एक को आप के मर्तबे का इल्म हो जायेगा के आप तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम के सरदार हैं।

आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद दूसरे अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलाम शफ़ाअत करेंगे,अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलाम के बाद सुलहा,उलमा,शुहदा, हुफ़्फ़ाज़ और हुज्जाज शफ़ाअत करेंगे,बलके हर वह शख़्स जिसे कोई दीनी मनसब इनायत हुवा,अपने अपने मुतअल्लिक़ीन की शफ़ाअत करेगा,लेकिन बिला इजाज़त कोई शख़्स शफ़ाअत न कर सकेगा।

रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया: मेरी उम्मत में से बाज़ लोग एक बडी जमाअत की शफ़ाअत करेंगे और बाज़ एक क़बीले की और बाज़ चालीस आदमियों की और कोई एक आदमी की शफ़ाअत करेगा,मुसलमानों के छोटे बच्चे भी क़यामत के दिन अपने मां बाप की शफ़ाअत करेंगे और बाज़ लोगों की शफ़ाअत क़ुरआने करीम या कोई और नेक अमल करेगा। (1)

हौज़े कौसर की तफ़सीलात

क़यामत के दिन हर नबी के लिये एक हौज़ होगा और हर नबी की उम्मत की अलग अलग पहचान होगी,जब लोग क़बरों से उठाये जायेंगे तो उन को निहायत शिद्दत की प्यास लगेगी,तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम अपनी अपनी उम्मत को पहचान कर अपने अपने हौज़ से पानी पिलायेंगे।

(1) (सही बुख़ारी,किताबुर्रिक़ाक़,बाबु सिफ़तिल जन्नति वन्नार:२/९७१,जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़तिल क़ियामति,बाबु माजाअ फ़िशिफ़ाअति:२/६९)

आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत की पहचान यह है के इन के वुज़ू के आज़ा निहायत रोशन होंगे,हमारे नबी–ए–करीम स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हौज़ का नाम कौसर है,वह सब हौज़ों से बडा है,उस की लम्बाई एक माह की मसाफ़त है,उस के किनारे बराबर हैं यानी वह चौकोर है,उस के अर्ज़ व तूल(लम्बाई,चौडाई)दोनों बराबर हैं और उस के किनारों पर मोती के क़ुब्बे हैं, उस की मिट्टी निहायत ख़ुशबूदार मुश्क की है,उस का पानी दूध से ज़ियादा सुफ़ैद,शहद से ज़ियादा मिठा,गुलाब और मुश्क से ज़ियादा ख़ुशबूदार,सूरज से ज़ियादा रोशन और बर्फ़ से ज़ियादा ठंडा है,उस के बरतन सितारों की तरह चमकदार और बकसरत हैं,उस में जन्नत से दो परनाले हर वक़्त गिरते रहते हैं, एक सोने का दूसरा चांदी का।

आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दस्ते मुबारक से जाम भर भर कर पिलायेंगे,मोमिनीन उसे पीकर ख़ूशहाल हो जायेंगे,जो एक बार पी लेगा फिर उस के बाद कभी भी उस को प्यास न लगेगी।

सब से पहले पीने के लिये मुहाजिर फ़ुक़रा आयेंगे,यह वह लोग हैं के दुनिया में जिन के सरों के बाल बिखरे हुये और चेहरे भूक और मेहनत व थकन के बाइस बदले हुये होते थे,उन के लिये बादशाहों और हाकिमों के दरवाज़े नहीं खोले जाते थे और उमदा औरतें उन के निकाह में नहीं दी जाती थीं और उन के मुआमलात की ख़ूबी का यह हाल था के उन के ज़िम्मे जो हक़ किसी का होता था तो सब चुका देते थे और उन का जो हक़ किसी पर होता था तो पूरा न लेते थे,बलके थोडा बहुत छोड देते थे।

बाज़ लोग जिन्हों ने दीन में नई नई बातें पैदा की होंगी,वह हौज़ पर आने से रोक दिये जायेंगे।(1)

नूर की तक़सीम

पुल सिरात पर से गुज़रने से पहले नूर तक़सीम होगा,ईमान वाले मर्दों और औरतों को उन के अपने अपने आमाल के बक़द्र नूर मिलेगा जिस की रोशनी में पुल सिरात पर से गुज़रेंगे,यह नूर अल्लाह तआला की तरफ़ से जन्नत का रास्ता बताने वाला होगा,किसी का नूर पहाड के बराबर होगा,किसी का नूर खजूर के दरख़्त के बराबर होगा,सब से कम नूर उस शख़्स का होगा जो सिर्फ़ अंगूठे पर टिमटिमाते चिराग़ की तरह होगा,कभी बुझ जायेगा और कभी रोशन हो जायेगा।

(१) (माअख़ज़ुहु सही बुख़ारी,किताबुलहौज़:२/९७३,ता९७५)

नाम-ए-आमाल की तक़सीम

क़यामत के दिन सब को नाम-ए-आमाल दिये जायेंगे,मोमिनों को सामने से दायें हाथ में और काफ़िरों को पीछे से बायें हाथ में मिलेंगे।नेकियां और बुराइयां तराज़ू में तोली जायेंगी,जिस की नेकियों का पल्ला भारी होगा,वह जन्नत में जायेगा और जिस की नेकियों का पल्ला हलका होगा,वह दोज़ख़ में जायेगा और जिस के दोनों पल्ले बराबर होंगे वह कुछ मुद्दत आराफ़ में रहेगा,फिर अल्लाह तआला की रहमत से जन्नत में जायेगा।मुसलमानों के हिसाब में आसानी होगी और काफ़िरों के हिसाब में तंगी और रुसवाई होगी,किसी पर भी ज़र्रा बराबर ज़ुल्म न होगा,ज़ालिम की नेकियां मज़लूम को दे दी जायेंगी,जब नेकियां ख़त्म हो जायेंगी तो मज़लूम की बुराइयां ज़ालिम पर डाल दी जायेंगी।चरिंद,परिंद और वहशी जानवरों का भी हिसाब होगा इन्सान और जिन्नात के अलावा सब को बदला दिलाकर ख़त्म कर दिया जायेगा।

पुल सिरात पर ईमान और उस की तफ़सीलात

जन्नत में जाने के लिये दोज़ख़ पर एक पुल होगा जो के बाल से ज़ियादा बारीक,तलवार से ज़ियादा तेज़,रात से ज़ियादा काला और आग से ज़ियादा गर्म होगा,उस में फिसलन होगी जिस की वजह से चलना मुशकिल होगा,सब को उस पर चलने का हुक्म होगा। उस पर सब से पहले नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुज़रेंगे,आप के बाद आप की उम्मत गुज़रेगी और फिर दूसरे लोग गुज़रेंगे,उस वक़्त अंबिया के अलावा कोई और बात नहीं करेगा और अंबिया अलैहिमुस्सलाम की बात(अल्लाहुम्म सल्लिम सल्लिम),ऐ अल्लाह!बचा,हिफ़ाज़त फ़र्मा) होगी, जहन्नम में पुल सिरात के दोनों जानिब सअदान झाडी के कांटो की तरह आंकडे होंगे,वह बाज़ लोगों को अल्लाह तआला के हुक्म से पकड कर जहन्नम में गिरा देंगे और बाज़ का गोश्त छील डालेंगे,लेकिन जहन्नम में गिराये जाने से बचा लिये जायेंगे।

मोमिन सब गुज़र जायेंगे,बाज़ बिजली की तरह,बाज़ तेज़ हवा की तरह, बाज़ परिंदों की तरह,बाज़ तेज़ घोडे की तरह,बाज़ तेज़ ऊंट की तरह,बाज़ पैदल तेज़ चलने वाले की तरह,बाज़ औरतों की तरह आहिस्ता आहिस्ता चलेंगे,बाज़ सुरीन पर घसीटते हुये चलेंगे और कोई च्यूंटी की चाल चलेगा, काफ़िर और मुनाफ़िक़ कट कट कर दोज़ख़ में गिर जायेंगे।(1)

(1) (माअख़ज़ुहु सही बुख़ारी,किताबुर्रिक़ाक़,बाबुस्सिराति जसरु जहन्नम:२/९७३,माअख़ज़ुहु सही मुस्लिम, अलईमान, बाबु इस्बातिश्शफ़ाअति:१/१०२,११२)

दोज़ख़ पर ईमान और उस की तफ़सीलात

दोज़ख़ की बनावट

दोज़ख़ अल्लाह तआला का जेल ख़ाना है जिस में नाफ़र्मानों को डाला जायेगा।

अल्लाह तआला ने फ़र्माया जिस का मफ़हूम है: जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है। (1)

एक जगह फ़र्माया जिस का मफ़हूम है: दोज़ख़ियों को आग ऊपर से भी घेरे में लिये हुये होगी।और नीचे से भी घेरे में लिये हुये होगी (2)

जहन्नम की गहराई इतनी है के अगर एक पथ्थर जहन्नम में डाला जाये तो दोज़ख़ की तह में पहुंचने से पहले सत्तर(७०)साल तक गिरता चला जायेगा।

दोज़ख़ की दीवारें जो उसे चारों तरफ़ से घेरे हुये हैं,वह इतनी मोटी हैं के उन में से सिर्फ़ एक दीवार की चौडाई तै करने के लिये चालीस साल ख़र्च हों।

दोज़ख़ के सात तबक़े हैं,उन सात तबक़ों में कम व बेश मुख़्तलिफ़ क़िस्म का अज़ाब है,दोज़ख़ियों में सब से हलका अज़ाब उस शख़्स को होगा के जिस की दोनों जूतियां और तस्मे आग के होंगे जिन की वजह से हांडी की तरह उस का दिमाग़ खौलता होगा,वह समझेगा के सब से ज़ियादा अज़ाब उसे हो रहा है।(3)

आग का अज़ाब और उस की कैफ़ियत

दोज़ख़ को एक हज़ार बरस तक दहकाया गया तो उस की आग सुर्ख़ हो गई,फिर एक हज़ार बरस तक दहकाया गया तो उस की आग सुफ़ैद हो गई,फिर एक हज़ार बरस तक दहकाया गया तो उस की आग सियाह हो गई,अब दोज़ख़ सियाह है अंधेरी रात की तरह तारीक है,उस की लपेट से उस में रोशनी नहीं होती,यानी हमेशा अंधेरा ही रहता है,दोपहर को रोज़ाना दोज़ख़ दहकाई जाती है।(4)

दोज़ख़ बहुत बडी जगह है,लेकिन अज़ाब के लिये दोज़ख़ियों को तंग तंग जगहों में रख़्खा जायेगा,जिस तरह दीवार में कील गाडी जाती है,इस तरह दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में ठोंसा जायेगा,सब्र करने पर भी अज़ाब से रिहाई न होगी।

दोज़ख़ में एक आग का पहाड है जिस पर दोज़ख़ी को सत्तर(७०)साल तक चढाया जायेगा,फिर सत्तर साल तक ऊपर से गिराया जायेगा और हमेशा उस

(1) (आले इमरान:१२)(2) (अज़्ज़ुमर:१६)(3) (मअख़ज़ुहु सही मुस्लिम,बाबु जहन्नम.२/३८१)(4) (मअख़ज़ुहु जामिउत्तिर्मिज़ी,सिफ़तु जहन्नम,बाबुन फ़ी सिफ़तिन्नार.अर्रक़्म:२५९१)

के साथ ऐसा ही होता रहेगा।दोज़ख़ की आग दुनिया की आग से सत्तर (७०) हिस्सों में से एक हिस्सा है,आदमी और पथ्थर उस का ईंधन हैं।

दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में भर कर दरवाज़े बंद कर दिये जायेंगे,आग के इतने बडे बडे शोले होंगे जैसे सुतून होते हैं और दोज़ख़ी उस में बंद होंगे।

दोज़ख़ियों को आग रोज़ाना सत्तर हज़ार मर्तबा जलायेगी,हर मर्तबा जलाने के बाद कहा जायेगा: जैसे थे वैसे ही हो जाओ। चुनांचे वह हर बार वैसे ही हो जायेंगे।

दोज़ख़ी को आग जलायेगी जिस की वजह से उस का ऊपर का होंट सुकड कर बीच सर तक पहुंच जायेगा और नीचे का होंट लटक कर नाफ़ तक पहुंच जायेगा।

दोज़ख़ियों के सरों पर खोलता हुवा पानी डाला जायेगा जो उन के पेटों में पहुंच कर उन तमाम चीज़ों को काट देगा जो उन के पेटों के अंदर हैं और आख़िर में क़दमों से निकल जायेगा,उस के बाद फिर दोज़ख़ी को वैसा ही कर दिया जायेगा जैसे पहले था।

खौलते पानी में गुनेहगार के बाल पकड कर गोता दिया जायेगा जिस से उस का तमाम गोश्त गल कर गिर जायेगा और हड्डियों के ढांचे और दो आंखों के सिवा कुछ न बचेगा।(1)

दोज़ख़ के सांप और बिच्छू

दोज़ख़ में बडी लम्बी गर्दनों वाले ऊंटों के बराबर सांप हैं,जब उन में से कोई सांप एक बार डसेगा तो दोज़ख़ी चालीस(४०)साल तक उस की सोज़िश महसूस करता रहेगा।

दोज़ख़ में पालान से लदे हुये ख़च्चरों की तरह बिच्छू हैं,जब उन में से कोई बिच्छू एक बार डसेगा तो दोज़ख़ी चालीस(४०)साल तक उस की सोज़िश महसूस करता रहेगा,दोज़ख़ियों पर ऐसे बिच्छू मुसल्लत किये जायेंगे जिन के नौकीले दांत लम्बी लम्बी खजूरों के बराबर होंगे।(2)

दोज़ख़ के लिबास और खाने

दोज़ख़ियों के लिबास उस तांबे के होंगे जो सख़्त गर्म आग जैसे होंगे,दोज़ख़ियों को खौलते हुये चश्मे का पानी मिलेगा और सिवाये ज़रीअ (कांटेदार दरख़्त)के खाने के लिये कुछ न होगा,जो न ताक़त देगा न भूक दूर करेगा।

ज़रीअ एक कांटेदार दरख़्त का नाम है जो एलवे से कडवा,मुर्दे से ज़ियादा

(1) (मअख़ज़ुहु मिश्कात,किताबुल फ़ितन,बाबु सिफ़तिन्नार व अहलिहा:२/५०३)(2) (मअख़ज़ुहु मिश्कात,किताबुलफ़ितन,बाबु सिफ़तिन्नार व अहलिहा:२/५०४)

बदबूदार और आग से ज़ियादा गर्म होगा,अगर जानवर भी उस को खाले तो मर जाये,उस को बहुत ज़ियादा खाने के बाद भी भूक दूर न होगी।अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में इर्शाद फ़र्माया जिस का मफ़हूम है: उन के खाने के लिये पीप के अलावा कुछ न होगा। (1)

दूसरी जगह इर्शाद फ़र्माया जिस का मफ़हूम है: बेशक ज़क्कूम (थूहर)का दरख़्त है गुनेहगारों का खाना है जो मिस्ल तलछट के है और पेट में खौलता रहता है।(2)

ज़क्कूम खाने के बाद जहन्नमी खौलता हुवा पानी पियेंगे जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं,ज़क्कूम दोज़ख़ की जड में से निकलता है,उस के फल ऐसे हैं जैसे सांपों के फन।

हदीस शरीफ़ का मफ़हूम है: ज़क्कूम का एक क़तरा भी दुनिया में टपका दिया जाये तो तमाम दुनिया वालों की ग़िज़ायें कडवी कर दे। (3)

कुरआने मजीद में है: दोज़ख़ी खौलते हुये पानी और ग़स्साक़ के अलावा किसी ठंडक और पीने की चीज़ का मज़ा तक न चख सकेंगे। (4)

हदीस में है: के अगर ग़स्साक़ का एक डोल दुनिया में डाल दिया जाये तो तमाम दुनिया वाले सड जायें। (5)

उलमा ने फ़र्माया:ग़स्साक़ दोज़ख़ियों की पीप और उन का धूवन है या दोज़ख़ियों के आंसू हैं या दोज़ख़ियों का ठंडक वाला अज़ाब है या सडी हुई और ठंडी पीप है जो ठंडक की वजह से पी न जा सके,मगर भूक की वजह से मजबूरन पीनी पडेगी।

अल्लाह तआला का इर्शाद है जिस का मफ़हूम है: अगर प्यास से तडप कर फ़रियाद करेंगे तो उन को ऐसा पानी दिया जायेगा जो तेल की तलछट की तरह होगा,जो चेहरों को भून डालेगा।(6)

एक और जगह इर्शाद है: गले में अटक जाने वाला खाना होगा। (7)

उस के उतारने के लिये तदबीरें सोचेंगे तो याद आयेगा के दुनिया में पीने की चीज़ों से गले की अटकी हूई चीज़ें उतारा करते थे,लिहाज़ा पीने की चीज़ तलब करेंगे तो खौलता हुवा पानी लोहे के चिमटों के ज़रीये उन के सामने कर दिया जायेगा,जब वह चिमटे उन के चेहरों के क़रीब होंगे तो उन के चेहरों को भून डालेंगे,फिर जब पानी पेटों में पहुंचेगा तो पेट के अंदर की चिज़ों यानी आंतों

(1) (अलहाक़्क़ा:३६) (2) (अद्दुख़ान:४३ता ४६) (3) (जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़ति जहन्नम,बाबु सिफ़ति शराबि अहलिन्नार:२/८६) (4) (अन्नबा:२४,२५) (5) (जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़ति जहन्नम,बाबु सिफ़ति शराबि अहलिन्नार:२/८६) (6) (अलकहफ़:२९) (7) (इब्राहीम:१७)

वग़ैरा के टुकडे टुकडे कर डालेगा।(1)

दोज़ख़ियों की जिस्मानी कैफ़ियत

काफ़िर अपनी ज़ुबान को एक फ़रसख़ और दो फ़रसख़ तक खींचकर बाहर निकाल देगा जिस पर लोग चलेंगे,एक फ़रसख़ तीन मील का होता है।

काफ़िर की डाढ उहुद पहाड के बराबर होगी और उस की खाल की मोटाई तीन दिन के रास्ते के बराबर होगी।

दोज़ख़ी के कान की लौव और मूंढे के दर्मियान सत्तर(७०)साल चलने का रास्ता होगा जिस में ख़ून और पीप की वादियां जारी होंगी।

अगर दोज़ख़ियों में से कोई शख़्स दुनिया की तरफ़ निकाल दिया जाये तो उस के वहशी सूरत के मनज़र और बदबू की वजह से दुनिया वाले मर जायें।

दोज़ख़ी के सारे बदन पर गंधक लिपटी हुई होगी,ताके उस में जल्दी और तेज़ी के साथ आग लग सके।(2)

अज़ाब की वजह से दोज़ख़ियों की हालत

दोज़ख़ी इतना रोयेंगे के उन के आंसू उन के चेहरों में नालियां सी बना देंगे,रोते रोते आंसू निकलना बंद हो जायेंगे तो इन दोज़ख़ियों के ख़ून बहने लगेंगे जिस की वजह से आंखें ज़ख़मी हो जायेंगी,उन के आंसुवों में कश्तियां छोड दी जायें तो वह उन में चलने लगें।(3)

दोज़ख़ी गधों की तरह चिल्लाते होंगे।(4)

दोज़ख़ियों की दरख़्वास्त

अज़ाब से परेशान होकर दोज़ख़ के दारोग़ा से कहेंगे: अपने परवरदिगार से दुआ करो के किसी एक दिन तो हम से अज़ाब हलका कर दे।

फिर मालिक(दारोग़-ए-जहन्नम)से दरख़्वास्त करेंगे:

ऐ मालिक! तुम ही दुआ करो के तुम्हारा परवरदिगार हम को मौत देकर हमारा काम तमाम कर दे। दोज़ख़ियों की दरख़्वास्त और मालिक के जवाब में हज़ार बरस का अरसा होगा,उस के बाद कहेंगे: आओ अपने रब से बराहे रास्त दुआ करें और दरख़्वास्त करें। अल्लाह तआला उन की दरख़्वास्त के जवाब में फ़र्मायेंगे:

उसी में फिटकारे हुये पडे रहो और मुझ से बात न करो। अल्लाह तआला के

(1) (मअख़ज़ुहु जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़ति जहन्नम,बाबु माजाअ फ़ी सिफ़ति शराबि अहलिन्नार: २/८५) (2) (मअख़ज़ुहु जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़ति जहन्नम,बाबु माजाअ फ़ी अज़्मि अहलिन्नार:२/८१) (3) (मअख़ज़ुहु मिश्कात,किताबुलफ़ितन,बाबु सिफ़तिन्नार व अहलिहा:२/५०४) (4) (सही बुख़ारी, किताबु बदइल ख़लक़,बाबु सिफ़तिन्नार व इन्नहा मख़्लूक़तुन,१/४६२)

इस इर्शाद के बाद वह हर क़िस्म की भलाई से ना उम्मीद हो जायेंगे।

क़यामत का दिन और दोज़ख की हालत

क़यामत के रोज़ दोज़ख़ को लाया जायेगा जिस की सत्तर हज़ार बागें होंगी,हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे जो उस को खींच रहे होंगे,अगर उस वक़्त फ़रिश्ते दोज़ख़ की बागें छोड दें तो वह हर नेक व बद को अपने नरग़े(लपेट) में ले ले।जिस तरह जानवर दाना तलाश कर के चुगता है,इसी तरह दोज़ख़ मैदाने हशर से उन लोगों को चुन लेगी जिन का दोज़ख़ में जाना तै हो गया होगा।

जहन्नम में दोज़ख़ी डाले जाते रहेंगे और दोज़ख़ क्या और भी कोई है कहती जायेगी,सब दोज़ख़ी दाख़िल हो जायेंगे,फिर भी न भरेगी,यहां तक के अल्लाह तआला उस पर अपना क़दम रख देंगे जिस की वजह से दोज़ख़ सिमट जायेगी और यूं अर्ज़ करेगी: बस बस आपकी इज़्ज़त और करम का वास्ता देती हूं।

अभी जहन्नम दोज़ख़ियों से सौ साल के फ़ासले पर होगी तो उस की नज़रें दोज़ख़ियों पर पडेंगी,वह देखते ही जोश व ख़रोश से आवाज़ें निकालेगी जिसे वह सुन लेंगे।(1)

दोज़ख के फ़रिश्ते

मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अज़ाब देने के लिये उन्नीस(१९)फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं,हर एक फ़रिश्ते में तमाम जिन्नात व इन्सानों के बराबर ताक़त है।(2)

लोहे के गुर्ज़ और ज़ंजीरें

दोज़ख़ियों के मारने के लिये लोहे के गुर्ज़ होंगे,दोज़ख़ का एक गुर्ज़ अगर ज़मीन पर रख दिया जाये और तमाम जिन्नात और इन्सान मिलकर उसे उठाना चाहें तो नहीं उठा सकते,अगर पहाड पर मार दिया जाये तो वह रेज़ा रेज़ा होकर राख हो जाये।

दोज़ख़ियों के जकडने की ज़ंजीरें आसमान और ज़मीन के दर्मियानी फ़ासले से लम्बी होंगी,यह ज़ंजीरें उन के जिस्म में पिरो दी जायेंगी,फिर पाख़ाने के रास्ते से डाली जायेंगी,फिर उन के मुंह से निकाली जायेंगी,फिर उन्हें आग में इस तरह भूना जायेगा जैसे सीख़ में टिड्डी भूनी जाती है।एक जानिब से सियाह बादल उठेगा जिसे दोज़ख़ी देखेंगे,उन से पूछा जायेगा: तुम क्या चाहते हो?

---

(1) (मअख़ज़ुहु सही मुस्लिम,बाबु जहन्नम अआज़नल्लाहु मिन्हा:२/३८१) (2) (मअख़ज़ुहु तफ़सीरे कुर्तुबी:१०/६०,६१,अलमुद्दस्सिर:३०)

वह कहेंगे: हम चाहते हैं के बारिश बरसे। चुनांचे उस बादल से तौक़ और ज़ंजीरें और आग के अंगारे बरसने लगेंगे,जिन के शोले उन्हें जलायेंगे और उन के तौक़ों और ज़ंजीरों में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जायेगा।

गुनेहगार मुसलमान,गुनाहों की सज़ा पाकर रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत से जल्द ही छुटकारा पालेंगे,बाज़ गुनेहगार मुसलमानों को अल्लाह तआला अपनी रहमत से दोज़ख़ में डाले बग़ैर जन्नत में दाख़िल फ़र्मा देंगे।(1)

अल्लाह तआला हमें भी इन में से बना दें,आमीन।

जन्नत पर ईमान और उस की तफ़सीलात

जन्नत अल्लाह तआला का मेहमान ख़ाना है,अल्लाह तआला ने उसे ईमान वालों के लिये बनाया है,उस में वह निअमतें रख्खी हैं,जिन को न किसी आंख ने देखा है,न किसी कान ने सुना है,न किसी के दिल पर उन का ख़याल गुज़रा है।(2)

जन्नत की ख़ुशबू चालीस(४०)साल की मसाफ़त से महसूस होगी।
जो शख़्स एक मर्तबा जन्नत में दाख़िल हो जायेगा फिर वहां से निकाला न जायेगा,जन्नत में न मौत है और न नींद,क्यूंके नींद भी एक क़िस्म की मौत है।

जन्नत की बनावट

जन्नत के आठ दरवाज़े हैं,उन में से एक दरवाज़ा ख़ुसूसी तौर पर नमाज़ियों के लिये है,एक जिहाद वालों के लिये,एक सदक़ा वालों के लिये और एक रोज़ेदारों के लिये है।(3)

जन्नत की मिट्टी ख़ुशबू में मुश्क की तरह और रंग में ख़ालिस सुफ़ैद मैदे की तरह है।

जन्नत की इमारत में एक ईंट सोने की और एक ईंट चांदी की है।

ईंटों के जोडने का गारा ख़ालिस मुश्क का है।

जन्नत की कंकरियां मोती और याकूत हैं।(4)

दो जन्नतें सोने की हैं,इन के बरतन और इन में हर चीज़ सोने की है और दो जन्नतें चांदी की हैं,उन के बरतन और उन में हर चीज़ चांदी की है।

जन्नत में एक मोती का ख़ैमा तीस मील या साठ मील लम्बा है।

---

(1) (मअख़ज़ुहु सही बुख़ारी,किताबुर्रिक़ाक़,बाबुन यदख़ुलुल जन्नत:२/९६९) (2) (मअख़ज़ुहु सही मुस्लिम,किताबुल जन्नति व सिफ़ति नईमिहा:२/३७८) (3) (मअख़ज़ुहु सही बुख़ारी,किताबु बदईल ख़ल्क़ बाबु सिफ़ति अबवाबिल जन्नति:१/४६१) (4) (मिश्कात,किताबुलफ़ितन,बाबु सिफ़तिल जन्नति व अहलिहा:२/४९७)

जन्नत की चौडाई ज़मीन व असमानो की चौडाई की तरह है।

जन्नत के दो किवाडों के दर्मियान चालीस साल की मसाफ़त का फ़ासला है।

एक हदीस का मफ़हूम है: जन्नत में सा दर्जे ऊपर नीचे हैं एक दर्जे से दूसरे दर्जे तक का फ़ासला ज़मीन व आसमान के दर्मियानी फ़ासले के बराबर है,यानी पांच सौ साल,सब दर्जों में बडा दर्जा फ़िरदौस का है और उसी से जन्नत की चारों नहरें निकली हैं और उस से ऊपर अर्श है,तुम जब अल्लाह तआला से मांगो तो फ़िरदौस मांगा करो। आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़र्माया है के:उन में एक एक दर्जा इतना बडा है के अगर तमाम दुनिया के आदमी एक दर्जे में भर दिये जायें तो अच्छी तरह समा जायें।

जन्नत के दरवाज़े इतने कुशादह होंगे के दोनों दरवाज़ों के दर्मियानी मसाफ़त तेज़ घोडे की सत्तर बरस की मसाफ़त के बराबर होगी,फिर भी जाने वाले इतने ज़ियादा होंगे के कंधे से कंधा लग रहा होगा,यहां तक के इस भीड की वजह से दरवाज़ा चर चराने लगेगा।

जन्नत में एक दरख़्त ऐसा है के घोडा सवार सौ बरस तक उस के साये में चले तो उस का साया ख़त्म न होगा।जन्नत में जितने दरख़्त हैं सब का तना सोने का है।

दुनिया की सारी निअमतें जन्नत की मामूली से मामूली निअमत का भी मुक़ाबला नहीं कर सकतीं।(1)

जन्नत में दाख़ला

जन्नत की तरफ़ सब से पहले नबी–ए–करीम अलैहिस्स्वलातु वस्सलाम तशरीफ़ ले जायेंगे,आप के बाद दूसरे अंबिया अलैहिमुस्स्वलातु वस्सलाम तशरीफ़ ले जायेंगे,उम्मतों में सब से पहले आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत जन्नत की तरफ़ रवाना होगी,फिर और उम्मतें जन्नत की तरफ़ रवाना होंगी।

तमाम उम्मतें सफ़ें बनायेंगी,उम्मते मुहम्मदिया की ८० सफ़ें और बाक़ी उम्मतों की ४० सफ़ें होंगी।ईमान और तक़वा के दर्जे के लिहाज़ से मोमिनीन की जमाअतें होंगी,उन सब जमाअतों को एज़ाज़ व इकराम के साथ जन्नत की तरफ़ रवाना किया जायेगा,उन के इस्तेक़बाल के लिये जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले होंगे और दरवाज़ों पर पहुंचते ही जन्नत के मुहाफ़िज़ इन को सलामती और ऐश व इशरत से रहने की ख़ूशख़बरी सुनायेंगे।

---

(1) (मअख़ज़ुहु सही बुख़ारी,किताबु बदइलख़ल्क़ि,बाबु माजाअ फ़ी सिफ़तिलजन्नति:१/४५९,सही मुस्लिम, किताबुलजन्नति व सिफ़ति नईमिहा.२/३७८,३८०)

फ़ुक़रा मालदारों से पांच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।

जन्नत का मौसम

जन्नत में न गर्मी होगी न सर्दी,जिस तरह सुबह के वक़्त में तुलूए आफ़ताब से पहले पहले एक सुहानापन और कैफ़ होता है,ख़ूशगवार मुअतदिल हवा के झोंके आते हैं,हर तरफ़ रोशनीदार साया ही साया नज़र आता है,मगर रोशनी ऐसी नहीं होती जो आंखों को चुधंया दे,इसी तरह हमावक़्त जन्नत में गहरा साया रहेगा और फ़िज़ा मुअतदिल होगी,एक अजीब तरह का सुहानापन और कैफ़ महसूस होता रहेगा,रोशनी में गर्मी और तपिश न होगी और वह रोशनी जिस क़द्र भी तेज़ हो,उस की वजह से साया ख़त्म न होगा और न आंखों को तकलीफ़ होगी।

अहले जन्नत की सिफ़ात

सब से पहले जो लोग जन्नत में जायेंगे उन का चेहरा ऐसा रोशन होगा जैसे चौधवीं रात का चांद,फिर जो उन के बाद जायेंगे उन का चेहरा तेज़ रोशनी वाले सितारे की तरह होगा।

जन्नती बे रीश होंगे,सर,पलकों और भवों के बालों के अलावा उन के बदन पर कहीं बाल न होंगे,आंखें कुदरती तौर पर सुरमगीं होंगी,सब नौजवान होंगे, उन की उम्र ३० या ३३ बरस रहेगी,कभी उस से ज़ियादा उम्र के न होंगे,उन का क़द्र बुलंदी में साठ हाथ होगा।

आपस में कोई इख़्तिलाफ़ और बुग़्ज़ न होगा,दिल लगी और ख़ूश तबई के तौर पर आपस में जामे शराब की छीना झपटी करेंगे,एक दूसरे को सलाम करेंगे,कोई फ़ुहश बात और गुनाह की बात वहां सुन्ने में नहीं आयेगी।(1)

जन्नत के लिबास और बिछोने

हर जन्नती को सत्तर सत्तर ऐसे जोडे मिलेंगे जिन में से जिस्म नज़र आयेगा,अगर जन्नत का कपडा दुनिया में पहना जाये तो देखने वाले बेहोश हो जायें,मोटे और बारीक रेशम के सब्ज़ कपडे पेश किये जायेंगे,जिस कपडे को जी चाहेगा ज़ेबे तन करेंगे,कपडे न बोसीदह होंगे न मैले होंगे।

अहले जन्नत के सरों पर ताज होंगे,उस ताज के मामूली से मामूली मोती की चमक भी इतनी ज़ियादा होगी के वह मशरिक़ और मग़रिब के दर्मियानी ख़ला को रोशन कर दे।

---

(1) (मअख़ज़ुहु सही मुस्लिम,किताबुल जन्नति व सिफ़ति नईमिहा व अहलिहा:२/३७९,सही बुख़ारी, किताबु बदइलख़ल्क़,बाबु माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नह:१/४६१)

जन्नतियों के बिछौनों की बुलंदी आसमान व ज़मीन के दर्मियानी फ़ासले के बराबर है जो पांच सौ बरस की मसाफ़त है।(1)

अहले जन्नत का पहला नाश्ता

सब से पहले बतौरे इब्तिदाई मेहमानी के जो नाश्ता पेश किया जायेगा वह ज़मीन की रोटी,बैल और मछली की कलीजी का होगा।

जन्नत की हूरें

हर जन्नती के लिये बहुत सी हूरें होंगी,हूरें नूरानी मख़लूक़ हैं,जिन की ख़ूबसूरती की कोई हद नहीं है,अगर वह ज़मीन की तरफ़ झांकें तो जन्नत से ज़मीन तक सब रोशन हो जाये और ख़ुशबू से भर जाये और चांद व सूरज की रोशनी भी मांद पड जाये,उन के सर की ओढनी दुनिया और उस में मौजूद हर चीज़ से बेहतर है,अगर वह अपनी हथेली ज़मीन व आसमान के दर्मियान निकालें तो उन के हुस्न की वजह से मख़लूक़ फ़ितने में पड जाये और अगर अपना दुपट्टा ज़ाहिर करें तो उस की चमक के आगे आफ़ताब ऐसा हो जाये जैसे आफ़ताब के सामने चिराग़।

हर जन्नती को कम से कम दो बीवियां हूरे ऐन में से मिलेंगी जो सत्तर सत्तर जोडे पहने हुये होंगी,सत्तर जोडे पहन्ने के बावजूद उन के जोडों और गोश्त के बाहर से उन की पिंडलियों का गूदा तक दिखाई देगा जैसे सुफ़ेद शीशे में सुर्ख़ शराब दिखाई देती है।मर्द जब उन के पास जायेगा,उन्हें हर बार कुंवारी पायेगा,मगर उस की वजह से मर्द व औरत किसी को तकलीफ़ न होगी,अल्लाह तआला ने उन्हें याक़ूत से तशबीह दी है,याक़ूत में सूराख़ कर के अगर डोरा डाला जाये तो बाहर से दिखाई देता है,जन्नती अपने चेहरे को उन के रुख़सार में आइने से भी ज़ियादा साफ़ देखेंगा।अगर हूर समुंदर में थूक दे तो उस के थूक की शीरीनी(मिठास) की वजह से सात समुंदर शहद से ज़ियादा शीरीं हो जायें,हूरें कहेंगी के हम हमेशा रहने वालियां हैं,कभी न मरेंगी,हम ख़ूशहाल हैं,कभी बदहाल न होंगीं,हम ख़ुश हैं,कभी
नाराज़ न होंगी मुबारक हो उसे जो हमारा है और हम उस के।(2)

खाने पीने से मुतअल्लिक़ निअमतें

जन्नत में चार नहरें अल्लाह तआला ने जारी फ़र्माई हैं:

(१) पानी की नहरें जिन का पानी बदबूदार नहीं होता।

(1) (मअख़ज़ुहु जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़तिल जन्नह,बाबु माजाअ फ़ी सिफ़ति सियाबि अहलिल जन्नह:२/८०) (2) (मअख़ज़ुहु जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़तिल जन्नति,बाबु माजाअ फ़ी सिफ़ति अहलिल जन्नति:२/८०)

(२) दूध की नहरें जिन का मज़ा देर तक रहने से नहीं बदलता।
(३) शराब की नहरें ख़ूश ज़ाइक़ा।
(४) ख़ालिस साफ़ शहद की नहरें।

इस शहद और दूध जैसी दुनिया की कोई चीज़ मीठी और सुफ़ेद नहीं है और न उस पानी और शराब की मिसाल दुनिया में मिल सकती है,वह शराब ऐसी नहीं जिस में बदबू ,कडवाहट और नशा हो जिस के पीने से अक़्ल जाती रहे और बेहूदा बातें होने लगें।

नहरों का एक किनारा मोती का,दूसरा याक़ूत का है,नहरों की ज़मीन ख़ालिस मुश्क की है,चारों नहरें शाख़ दर शाख़ बहुत सी नहरें हो जाती हैं और हर एक के मकान से बहती हूई गुज़रती हैं।जन्नतियों के हाथ में सोने की छडियां होंगी, उन छडियों से जिस तरफ़ इशारा करेंगे,नहरें उसी तरफ़ को चलेंगी।

जन्नत में न पेशाब की ज़रूरत होगी,न पाख़ाने की,न थूक होगा,न रेंट, किसी ने आप स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा: फिर खाना कहां जायेगा? यानी जब पेशाब पाखाना न होगा तो हज़म होकर फ़ुज़ला कैसे निकलेगा?

रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया: खाने के बाद एक ख़ुशबूदार फ़रहत बख़्श डकार आयेगी या फ़रहत बख़्श ख़ुशबूदार पसीना आयेगा तो खाना पीना हज़म होकर सब बोझ और गिरानी दूर हो जायेगी,डकार और पसीने की ख़ुशबू मुश्क और काफ़ूर से ज़ियादा होगी।

खाना पीना,आराम,ख़ुशी,जिमाअ,लज़्ज़त वग़ैरा जन्नतियों को बहुत हासिल होगा,जितना खायेंगे खाना कम न होगा और न लज़्ज़त में कमी होगी, बलकी ज़ियादती होगी,हर लुक़मे में सत्तर मज़े इखट्ठे महसूस होंगे,मेवे देखने में एक जैसे होंगे,मगर मज़े में मुख़्तलिफ़,अकसर ऐसा होगा के दोनों मर्तबा के फलों की सूरत एक सी होगी जिस से वह यूं समझेंगे के यह पहली ही क़िस्म का फल है, मगर खाने में मज़ा दूसरा होगा जिस से लुत्फ़ में इज़ाफ़ा हो जायेगा,जन्नत के अंगूर के एक दाने का रस इतना होगा के जिस से बहुत बडा डोल भर जाये,जन्नत की खजूरों में घुटली नहीं और उन की लम्बाई बारह हाथ है।

अगर किसी परिंदे को देखकर उस का गोश्त खाने को जी चाहेगा तो उसी वक़्त उस का भूना हूवा गोश्त पास आ जायेगा,जन्नती उस में से इस क़द्र खायेगा के उस का पेट भर जायेगा,बाद में वह परिंदा उड जायेगा।

हर शख़्स को सौ आदमियों के बराबर खाने पीने और जिमाअ की ताक़त दी जायेगी।

जन्नत में लम्बी लम्बी गर्दनों वाले ऊंटों के बराबर परिंदे हैं जो जन्नत के दरख़्तों में उडते फिरते हैं।अगर पानी वग़ैरा की ख़्वाहिश होगी तो कूज़े ख़ुद ब ख़ुद हाथ में आ जायेंगे,इन में ठीक अंदाज़े के मुताबिक़ पानी,दूध,शराब और शहद होगा जो उन की ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगा,न एक क़तरा कम न एक क़तरह ज़ियादा,पीने के बाद वह कूज़े ख़ुद ब ख़ुद जहां से आये थे वहां चले जायेंगे।(1)

जन्नत की दूसरी बाज़ निअमतें

कंघियां सोने की होंगी।हर जन्नती के लिये निहायत ख़ुबसूरत महल्लात होंगे। जन्नतियों को सोने के,चांदी के और मोतियों के ज़ेवर पहनाये जायेंगे,जन्नत में सवार के कूडा डालने की(आम व मामूली)जगह भी दुनिया और उस में मौजूद हर चीज़ से बेहतर है,अगर जन्नती का कंघन ज़ाहिर हो तो आफ़ताब की रोशनी को मिटा दे,जैसे आफ़ताब सितारों की रोशनी को मिटा देता है।

जो चीज़ चाहेंगे उसी वक़्त उन के सामने मौजूद होगी,अगर कोई जन्नती सुर्ख़ याक़ूत के घोडे पर सवार होना चाहेगा तो उस की चाहत पूरी कर दी जायेगी,चुनांचे घोडा जन्नती को जन्नत में जहां वह चाहेगा,ले उडेगा।औलाद की ख़्वाहिश पर फ़ौरन औलाद हो जायेगी।(2)

जन्नतियों के ख़ादिम

अहले जन्नत की ख़िदमत के लिये लडके होंगे,वह लडके बिखरे हुये मोतियों की तरह होंगे,ख़ुबसूरती,चमक और रंग की सफ़ाई सुथराई में उस मोती की तरह होंगे जो सीपी में छुपा रहता है,गर्द व ग़ुबार से महफ़ूज़ रहता है।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार और अहले जन्नत से कलाम

सब से कम दर्जे वाले जन्नती से अल्लाह तआला पूछेंगे:

अगर तुझ को दुनिया के किसी बादशाह के मुल्क के बराबर मुल्क दे दें तो राज़ी हो जायेगा?

वह कहेगा:

ऐ परवरदिगार!मैं राज़ी हूं। इर्शाद होगा: जा तुझ को उस के पाच गुना दिया। वह कहेगा: ऐ रब!मैं राज़ी हो गया। फिर इर्शाद होगा: जा तुझ को इतना दिया

(1) (मअख़ज़ुहु सही बुख़ारी,किताबु बदइलख़ल्क़,बाबु माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति:१/४५९,सही मुस्लिम,किताबुल जन्नति व सिफ़तु नईमिहा व अहलिहा:२/३७८,जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफ़तिल जन्नति,बाबु माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति व नईमिहा :२/७९)(2) (मअख़ज़ुहु सही बुख़ारी, बदइलख़ल्क़ि, बाबु माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति:१/४६०)

और उस से दस गुना दिया और उस के अलावा जिस चीज़ को तेरा जी चाहे और जिस से तेरी आंख ठंडी हो वह तुझ को दिया।

जन्नत में एक बाज़ार है,उस बाज़ार में तरह तरह की निअमतें हैं,उस में जन्नतियों के लिये सोने,चांदी,याकूत,मोती,ज़बरजद और नूर के मेंम्बर होंगे, आमाल के बक़द्र हर एक जन्नती को दिये जायेंगे।आम जन्नती मुश्क और काफ़ूर के टीले पर बैठेगा,कोई अपने को कम मर्तबे वाला नहीं समझेगा,सब ख़ुशी से उन कुर्सियों और मेम्बरों पर बैठ कर अल्लाह तआला का दीदार करेंगे और उस की तारीफ़ करेंगे,उस वक़्त जन्नत की तमाम निअमतें भूल जायेंगे।(1)

जैसे आफ़ताब और चौधवीं रात के चांद को हर एक अपनी अपनी जगह से देखता है के एक का देखना दूसरे के लिये रुकावट नहीं बनता,इसी तरह हर एक जन्नती को अल्लाह तआला का दीदार होगा।अल्लाह तआला हर एक की तरफ़ तवज्जुह फ़र्मायेंगे किसी से फ़र्मायेंगे:

ऐ फुलां बिन फुलां!तुझे याद है के जिस दिन तूने ऐसा ऐसा किया था? उसे दुनिया के बाज़ गुनाह याद दिलायेंगे,बंदा अर्ज़ करेगा: ऐ रब!क्या आप ने मुझे बख़्श न दिया?

फ़र्मायेंगे: हां मेरी मग़्फ़िरत की वुसअत ही की वजह से तू इस मर्तबे को पहुंचा।

सब अल्लाह तआला का दीदार कर रहे होंगे के उन के ऊपर अबर छा जायेगा और वह ऐसी ख़ुशबू बरसायेगा के लोगों ने कभी ऐसी ख़ुशबू न पाई होगी,फिर अल्लाह तआला का इर्शाद होगा:

इस बाज़ार से जो चीज़ें तुम्हे पसंद हों वह ले लो। चुनांचे जन्नती अपनी अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ चीज़ें ले लेंगे,जन्नती उस बाज़ार में एक दूसरे से मिलेंगे,छोटे मर्तबे वाला बडे मर्तबे वाले के लिबास को पसंद करेगा,अभी गुफ़्तगू ख़त्म न होगी के छोटे मर्तबे वाला समझेगा के मेरा लिबास उस से अच्छा है,फिर जन्नती अपनी अपनी क़ियामगाह पर वापस आयेंगे। उन की बीवियां उन का इस्तेक़बाल करेंगी और मुबारक बाद देकर कहेंगी:

अब आप की ख़ुबसूरती उस वक़्त से कहीं ज़ियादा है जब के आप हमारे पास से गये थे। वह जवाब देंगे: अल्लाह तआला की बारगाह में हमें बैठना नसीब हुवा,इसलिये हमारी ख़ुबसूरती बढ गई। आम मोमिनीन को अल्लाह तआला का दीदार हर हफ़्ते में जुमा के दिन हुवा करेगा और ख़ास मोमिनीन को सुबह व

(१) (जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबुल जन्नति,बाबु माजाअ फ़ी सूक़िल जन्नति:२/८१)

शाम रोज़ाना हुवा करेगा। (अल्लाह तआला हमें भी नसीब फ़र्मायें,आमीन।)

अल्लाह तआला जन्नतियों से पूछेंगे: तुम ख़ुश भी हो?

वह अर्ज़ करेंगे: भला ख़ुश क्यूं न हों,आप ने तो हम को वह चीज़ें दी हैं जो आज तक किसी मख़्लूक़ को नहीं दीं।

इर्शाद होगा: क्या हम तुम्हें ऐसी चीज़ दें जो इन सब से बढकर हों? वह अर्ज़ करेंगे: इन से बढकर क्या चीज़ होगी?

इर्शाद होगा: मैं तुम से हमेशा ख़ुश रहूंगा,कभी नाराज़ न हूंगा।

जब जन्नती जन्नत में जा चुकेंगे तो अल्लाह तआला उन से फ़र्मायेंगे: तुम कुछ और चाहते हो के वह मैं तुम को दूं?

वह अर्ज़ करेंगे: हमारे चेहरे आप ने रोशन कर दिये,हम को जन्नत में दाख़िल कर दिया हम को दोज़ख़ से नजात दे दी और हम को क्या चाहिये?

उस वक़्त अल्लाह तआला पर्दा उठा देंगे,जिस क़द्र अल्लाह तआला के दीदार में लज़्ज़त होगी उतनी लज़्ज़त और किसी निअमत में न होगी।(1)

जन्नतियों का कलाम:

जन्नतियों की ज़ुबान पर हर वक़्त तस्बीह और तकबीर व तहमीद सांस की तरह जारी रहेगी।जन्नती अल्लाह तआला की तारीफ़ करेंगे और कहेंगे:

तर्जमा: अल्लाह का शुक्र है जिस ने हम से अपना वादा पूरा किया और हमें इस ज़मीन का वारिस बना दिया के हम जन्नत में जहां चाहें क़ियाम करें,अमल करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है। (2)

आराफ़ का बयान

आराफ़ जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान एक दीवार है जो जन्नत की लज़्ज़तों को दोज़ख़ तक और दोज़ख़ की तकलीफ़ों को जन्नत तक पहुंचने के लिये रुकावट है,जिन लोगों की नेकियां और बुराइयां बराबर होंगी,वह शुरू में आराफ़ में रहेंगे,फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जन्नत में जायेंगे।

कुफ़्र,शिर्क,बिदअत और बडे गुनाहों का बयान

किन बातों से आदमी ईमान से निकल जाता है:

जिन चीज़ो पर ईमान लाना ज़रूरी है,उन में से किसी एक चीज़ का भी इन्कार करना कुफ़्र है,अगर कोई मुसलमान जान बूझ कर बग़ैर किसी मजबूरी के बहालते होश व हवास कोई कलिमए कुफ़्र ज़ुबान से निकालेगा तो काफ़िर हो

(1) मअख़ज़ुहु जामिउत्तिर्मिज़ी,अबवाबु सिफतिल जन्नति,बाबु माजाअ फ़ी रूयतिर्रब्बि तबारक व तआला:२/८२, सही बुख़ारी,बदइलख़ल्क़ि,बाबु माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति:१/४६०) (2) अज़्ज़ुमर:७४,

जायेगा।

मसलन:किसी ने कहा: नमाज़ पढो । उस ने जवाब में कहा: नमाज़ फ़र्ज़ नहीं। या किसी ने कहा: सूद,ज़िना,झूट,नाहक़ क़त्ल करना,ज़ुल्म करना, जादू करना,शराब पीना,जुवा खेलना,ग़ीबत करना हलाल है। या यूं कहा: तेरे इस्लाम पर लानत। इन बातों के करने से काफ़िर हो जायेगा।

अगर कहा: अल्लाह नहीं है,यह सब ढोंग है। या यूं कहा: दुनिया ख़ुद बख़ुद बन गई। या यूं कहा: अलाह तआला हर वक़्त मौजूद नहीं या हमेशा से नहीं। या यूं कहा वह रहीम नहीं। या यूं कहा: अल्लाह तआला ज़ालिम है। या यह कहा: मुझे भी ग़ैब का इल्म है। या यह कहा: फ़रिश्ते मौजूद नहीं,अगर होते तो हमें दिखाई देते। या कुरआने करीम की तोहीन के तौर पर कहा: मैंने बहुत कुरआन पढ लिया। या डाढी वाले को कहा: यह क्या बुरी शक्ल बना रख्खी है। या यूं कहा: दोज़ख़ और जन्नत का ज़िक्र सिर्फ़ लोगों को डराने और ख़ुश करने के लिये किया है,वरना हक़ीक़त में कुछ नहीं। या कुरआने मजीद को इहानत की गर्ज़ से नजासत या आग में डाला तो इन तमाम सूरतों में काफ़िर हो जायेगा।(1)

कुफ़्रिया बात ज़ुबान से निकालने का वबाल:

(१) निकाह टूट जायेगा।

(२) उस के हाथ का ज़ुबह किया हुवा जानवर हराम हो जायेगा।

(३) उस के पिछले तमाम नेक आमाल का अज्र ज़ाया हो जायेगा।(2)

फ़ाइदा: अगर इस्लाम को छोडने का इरादा न हो,बल्कि नादानी और बेवुक़ूफ़ी से कलिमए कुफ़्र सरज़द हो जाये तो भी कुफ़्र से तोबा करनी चाहिये, और एहतियातन दोबारा निकाह करना ज़रूरी है।तोबा करने से पहले उस के हाथ से ज़ुबह किया हुवा जानवर न खाया जाये।कुतुबे फ़िक़ह में जो अलफ़ाज़ कलिमाते कुफ़्रिया के नाम से बयान किये जाते हैं,उन का हासिल सिर्फ़ यह है के उन कलिमात से ज़रूयाते दीन में से किसी चीज़ का इन्कार निकलता है,यह मतलब हर्गिज़ नहीं के जिस शख़्स की ज़ुबान से यह कलिमात निकलें,उस को बे सोचे समझे और मतलब की तहक़ीक़ किये बग़ैर काफ़िर कह दिया जाये,जब तक यह साबित न हो जाये के कहने वाले की मुराद उस के अपने अलफ़ाज़ से वही माना व मफ़हूम है जो काफ़िराना अक़ीदा है,उस को काफ़िर कहना जाइज़ नहीं।(3)

(1) अलबहरुर्राइक़,अहकामुल मुर्तद्दीन:५/१२०,आलमगीरी,बाबुत्तासिअ फ़िलमुर्तद्दीन :२/२५५ (2) फ़तावा शामी,बाबुल मुर्तदीन:४/२४५ (3) फ़तावा शामी,बाबुल मुर्तद:४/२२२,शरहुल फ़िक़हिल अकबर,फ़सलुन फ़िल इल्मि वल उलमा:१७४

शिर्क की हक़ीक़त:

किसी और को अल्लाह तआला के बराबर समझना और अल्लाह तआला की मख़्सूस ताज़ीम,इबादत व फ़र्मांबर्दारी की तरह किसी और की भी ताज़ीम, इबादत और फ़र्मांबर्दारी करना शिर्क है।

बिदअत की हक़ीक़त:

कुफ़्र और शिर्क के बाद सब से बडा गुनाह बिदअत है।बिदअत वह काम है जिस का कोई सुबूत शरीअत में न हो,यानी क़ुरआने मजीद और अहादीसे मुबारका में उस का सुबूत न हो और न ही रसुलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम,सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम,ताबिईन और तबए ताबिईन रहिमहुमुल्लाहु तआला के ज़माने में उस अमल का वुजूद हो,और न ही उस अमल की मिसाल उन ज़मानों में पाई जाये।(1)

किसी अमल के सुबूत की चार दलीलें हैं:

(१) किताबुल्लाह। (२) सुन्नते रसूलुल्लाह।
(३) इजमाए उम्मत। (४) क़यासे मुजतहिदीन।

शरीअत की इन चार दलीलों से उस अमल का सुबूत न मिले और उस को दीन का काम समझ कर किया जाये या छोडा जाये। (2)

बिदअत बहुत बुरा और बहुत बडा गुनाह है,आंहज़रत स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिदअत को मर्दूद फ़र्माया है,और जो शख़्स बिदअत ईजाद करे उस को दीन का ढानेवाला बताया है।(3)

चंद बिदअतें यह हैं:

(१) पुख़्ता क़बरें बनाना।
(२) क़बरों पर गुम्बद बनाना।
(३) क़बरों पर चराग़ां करना।
(४) क़बरों पर फूल,चादरें,ग़िलाफ़ डालना।
(५) मय्यित के मकान पर खाने के लिये जमा होना।
(६) ईसाले सवाब में दिन,ख़ुराक,तरीक़े का मख़्सूस करना।
(७) रस्मे कुल,सुवेम,गियारहवीं,चहलुम,और उर्स।(4)

---

(1) फ़तहुल बारी,किताबुस्सलातित्तरावीह:४/२१९(2) फ़तावा शामी,किताबुस्सलाति बाबुल इमामति: १/५२५ (3) सही बुख़ारी,किताबुस्सुल्हि,बाबु इज़स्तलहू अला १/३७१,सही मुस्लिम,किताबुल अक़्ज़ियति,बाबु नक़्ज़िल अहकामिल बातिलति वरद्द ? मुहदसातुल ऊमूर: १/७७ (4) माख़ज़ुहुम फ़तावा दारुल ऊलूम देवबंद,(इमदादुल मुफ़्तीईन)किताबुस्सुन्नति,वल बिदअति:२/१५४ ता २१५

चंद कबीरा गुनाहः

कुफ़्र, शिर्क और बिदअत के अलावा और भी गुनाह हैं, जो कबीरा गुनाह कहलाते हैं,जो तोबा के बग़ैर मुआफ़ नहीं होते,जिन में से चंद यह हैं:(1)

(१) ग़ीबत करना और ग़ीबत का सुनना।

(२) झूट बोलना।

(३) बुहतान लगाना।

(४) नामहरम औरत को देखना,उस की आवाज़ का शहवत के साथ सुनना,उस के पास तनहाई में बैठना।

(५) गाना सुनना,बाजा बजाना,नाच का देखना सुनना।

(६) छुपकर किसी की बात सुनना।

(७) हंसाने के लिये बेहूदा बात कहना।

(८) ऐसी किताबों का पढना,लिखना,सुनना,छपवाना,जिन में झूट,फ़िस्क़ व फ़ुजूर और नाफ़र्मान औरतों का ज़िक्र,या इश्क़,और दीगर बुरी बातें ज़िक्र की गई हों।

(९) मां बाप की नाफ़र्मानी करना,उन पर गुस्सा करना।(2)

(१०) तिजारत के अहकाम को जाने बग़ैर तिजारत करना।(3)

(११) टख़्नों से नीचे पायजामा पहनना।

(१२) फ़ुज़ूल ख़र्ची करना।

(१३) उस्ताद की बे अदबी करना।

(१४) चेहरे पर मारना।

(१५) अमानत में ख़यानत करना।

(१६) तीन दिन से ज़ियादा सोग मनाना।

(१७) लडकियों को विरासत से महरूम करना।

(१८) झूटी गवाही देना,सच्ची गवाही को छुपाना।

(१९) चुग़ली करना।

(२०) धोका देना।

(२१) अपने घरों और कमरों में तसवीरें लगाना,बिला ज़रूरत तसवीरें और

(1) इन गुनाहों से बचने के लिये मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रह.की किताब गुनाह बे लज़्ज़त और बैतुल इल्म की किताब किसी को तकलीफ़ न दीजिये इन किताबो का मुतालआ बहुत मुफ़ीद है।(2) मां बाप की नाफ़र्मानी से बचने के लिये दारुलहुदा उर्दू बाज़ार की किताब वालिदैन की क़द्र कीजिये नौजवानों को अपने मुतालेअ में रखनी चाहिये,इस किताब में १०० वाक़िआत ऐसे ज़िक्र किये गये हैं जो बच्चों को वालिदैने की इताअत व फ़र्मां बर्दारी पर उभारते हैं।(3) ताजिरो जन्नत कैसे जाओगे किताब का मुतालआ करें।

फ़ोटो खींचना,खिचवाना।

(२२) लोगों को हक़ीर व ज़लील समझना।

(२३) गाली देना।

(२४) सूद लेना,देना।

(२५) डाढी मुंडाना,एक मुश्त से कम करना।(1)

(२६) रिश्तेदारों से क़त–ए–तअल्लुक़ करना।(2)

(२७) बद अहदी करना।

(२८) दिखलावे के लिये कोई काम करना।

(२९) यतीम का माल नाहक़ खाना।

(३०) रिश्वत लेना,देना।

(३१) हैज़ की हालत में बीवी से सोहबत करना।

(३२) चीज़ों की क़ीमतें ज़ियादा होने से ख़ुश होना।

(३३) अल्लाह तआला के रिज़्क़ में ऐब निकालना।

(३४) दूसरों के मुक़ाबले में ख़ुद को अच्छा समझना।

(३५) अपनी बडाई चाहना।

(३६) हसद करना।

(३७) मुसलमानों से कीना रखना।

(३८) बिला वजह ग़ुस्सा करना।

(३९) कन्जूसी करना।

(४०) बे फ़ाइदा बात या काम करना,जिस में न दीनी फ़ाइदा हो,न दुनयवी।

(४१) धोका देने के लिये बालों को सियाह ख़िज़ाब लगाना।

(४२) बूढों की तोहीन करना।

चंद ग़लत और मशहूर बातों की इस्लाहः

(१)सोते में शिमाल की तरफ़ पांव करना मना नहीं।

(२) क़ैंची बजाने से आपस की लडाई का कोई तअल्लुक़ नहीं।

(३) दो आदमियों का एक कंघी को इस्तिअमाल करना लडाई का सबब नहीं।

(४) कव्वे का घर में बोलने से मेहमान के आने का कोई तअल्लुक़ नहीं।

---

(1) डाढी मुंडाना या एक मुश्त से कम करना,यह दोनों अमल गुनाहे कबीरा हैं और कम से कम एक मुश्त डाढी रखना वाजिब है,लिहाज़ा इस गुनाह से बचने के लिये बैतुल इल्म ट्रस्ट की किताब डाढी की शरई हैसियत का मुतालआ बहत मुफ़ीद रहेगा। (2) कुरआन व हदीस में सिलारहमी की बडी ताकीद और क़तए रहमी पर बडी वईदें आई हैं,लिहाज़ा सिलारहमी पर अमल करने और क़तए रहमी से बचने केलिये रिश्तेदारी का ख़याल रखिये किताब का मुतालआ कीजिये बडा फ़ाईदा होगा इन्शाअल्लाह।

(५) मर्द की बाईं आंख,और औरत की दाईं आंख फडकने से किसी मुसीबत, रंज और तकलीफ़ का कोई तअल्लुक़ नहीं,और उस के बरअक्स होने से ख़ुशी का कोई तअल्लुक़ नहीं।

(६) कुत्ते के रोने से वबा या बीमारी का कोई तअल्लुक़ नहीं।

(७) जाते हुये शख़्स को पीछे से बुलाने की वजह से,होने वाला काम रुकता नहीं।

(८) हाथ की हथेली में खारिश होने से कुछ मिलने का कोई तअल्लुक़ नहीं।

(९) शाम के वक़्त मुर्ग़े का अज़ान देना बुरा नहीं।

(१०) इस्लाम में नहूसत का कोई तसव्वुर नहीं,चुनांचे मंगल का दिन मनहूस नहीं,माहे सफ़र मनहूस नहीं,रात के वक़्त चोटी करना,झाडू देना,नाखुन काटना,खाना खाकर झाडू देना,असर की अज़ान के बाद झाडू देना,झाडू खडी रखना, चप्पल के ऊपर चप्पल रखना,चारपाई पर चादर लम्बाई वाली जानिब खडे होकर बिछाना नहूसत का सबब नहीं।

(११) सुबह सवेरे किसी को गाली देने,ठोकर लग जाने,या और कोई तक्लीफ़ पहुंच जाने पर शाम तक इसी तरह होते रहने का शुगून लेना,सही नहीं।

(१२) किसी काम के लिये जाते वक़्त बिल्ली के अपने आगे से गुज़र जाने से उस काम में नाकामी होने का ख़याल कर लेना,सही नहीं।

(१३) दुकानदार का सुबह सवेरे सामान उधार देने से इसलिये इन्कार करना के अगर मैं ने शुरू ही में उधार दे दिया तो माल शाम तक उधार ही फ़रोख़्त होगा, सही नहीं।

(१४) किसी आदमी के ग़ाइबाना तज़किरे के दौरान या कुछ देर बाद उस शख़्स के आजाने पर यह समझना के यह शख़्स बडी लम्बी उम्र वाला है,सही नहीं।

(१५) मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सालगिरा मनाना दुरुस्त नहीं।

(१६) मुख़्तलिफ़ रंग की चूडियां और कपडे पहनना जाइज़ है,यह ख़याल के फुलां रंग से मुसीबत आयेगी,दुरुस्त नहीं।

(१७) शरीअत में कोई महीना ऐसा नहीं जिस में शादी से मना किया गया हो।

(१८) हफ़्ते के सारे दिनों में सुर्मा लगाने की इजाज़त है।

(१९) फ़ाल खुलवाना ना जाइज़ है,कुरआने मजीद से फ़ाल देखना गुनाह है।

(२०) नुजूमियों को हाथ दिखाना और उन से मुस्तक़बिल का हाल मालूम करना, और उस पर यक़ीन करना,जाइज़ नहीं,कोई शख़्स किसी की क़िस्म्त का सही सही हाल नहीं बता सकता,न बुर्जों और सितारों में कोई ज़ाती तासीर है।

(२१) बच्चे के पैदाइश पर बच्चों को नज़रे बद से बचाने के लिये उस के गले या हाथ की कलाई में काले रंग की डोरी बांधना या बच्चे के सीने पर या सर पर काजल से सियाह रंग से निशान लगाना,दुरुस्त नहीं।

(२२) ग़ुरूबे आफ़ताब के फ़ौरन बाद बत्ती या चराग़ जलाना ज़रूरी नहीं।

(२३) मंगल या जुमआ को कपडे धोने में कोई हर्ज नहीं।

(२४) मुसल्ले का कोना इसलिये उलटना के न उलटने की सूरत में शैतान उस पर इबादत करेगा,दुरुस्त नहीं।

(२५) ज़मीन पर गर्म पानी गिराना मना नहीं।

(२६) ज़मीन पर नमक गिर जाने की सूरत में यह समझना के क़यामत के दिन पलकों से उसे उठाना पडेगा,दुरुस्त नहीं।

(२७) मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पत्थरों की अंगूठियां पहनना के उस से हमारी ज़िंदगी ख़ुशगवार होगी,दुरुस्त नहीं।

(२८) ईमान में दाख़िल होने के लिये और दाख़िल होने के बाद छे कलिमे,ईमाने मुफ़स्सल या ईमाने मुजमल के अलफ़ाज़ को सीखना ज़रूरी नहीं।

(२९) सदक़े से आफ़त टलती है,और सदक़ा बसूरते नक़्द ज़ियादा अफ़ज़ल है, लिहाज़ा किसी बीमार की तरफ़ से बकरा सदक़ा करने को ज़रूरी समझना, और उस का गोश्त इस निय्यत से चीलों को फेंकना के जल्द आसानी से रूह निकल जाये, या सदक़े की बरकत से शिफ़ा हो जाये,दुरुस्त नहीं।

(३०) जूते उतारने के बाद अगर वह आगे पीछे हों तो यह समझना के यह जूता जिस का है,अब वह सफ़र करेगा,यह दुरुस्त नहीं।(1)

(1) माख़ज़ुहुम अहसनुल फ़तावा,किताबुल ईमान वलअक़ाइद,बाबु रद्दिल बिदआत:१/३३६ ता ३८५,फ़तावा रहीमिया (जदीद) किताबुल अक़ाइद, मायतअल्लक़ु बिस्सुन्नति वल बिदअति:२/५९ ता २४५,फ़तावा महमूदिया,बाबुल बिदआति वर्रुसूमि:१५/४०१ ता ४३०

जामिया खैरुल उलूम, उदगांव.

मसाइल के सिलसिले मे मुफ्तियाने किराम से रुजू करें

जिम्मेदाराने जामिया :-

मौलाना अहमदुल्लाह साहिब इराणी, उदगांव
मोबा. 8806243767

हाफिज अब्दुस्समद साहिब इराणी, उदगांव
मोबा. 9422614004

मौलाना अब्दुलमजीद साहिब, इचलकरंजी
मोबा. 9822976522

मौलाना अब्दुर्रहमान साहिब, उदगांव
मोबा. 9421108481

हाफिज़ नुरुलहुदा साहिब, मिरज
मोबा. 9860540587

मौलाना नासिर साहिब, उदगांव
मोबा. 8600118836

जनाब दस्तगीर साहिब मेस्त्री, कोल्हापूर मोबा. 9890077593

मुफ्तियाने जामिया :-

मुफ्ती बद्रुद्दीन साहिब, बार्डी
मोबा. 9421030886

मुफ्ती युसुफ साहिब, इचलकरंजी
मोबा. 9689693435

मुफ्ती मुहम्मद साहिब, कोल्हापूर
मोबा. 9975838594

मुफ्ती सिद्दीक साहिब, नवेखेड
मोबा. 9922098249

मुफ्ती ज़ाकिर साहिब, उदगांव
मोबा. 9595701787

मुफ्ती निअमतुल्लाह साहिब इराणी, उदगांव
मोबा. 9503081157

मुफ्ती इरफान साहिब, मिरज
मोबा. 9764062061

खादिमे मदरसा :-

हाफिज़ नसरुद्दीन साहिब 9028760956

जनाब अब्दुलकादर भाई 9270626130

• जामिया से छपी हुई दिगर किताबें •

जामिया खैरुल उलूम, असादाबाद, उदगांव.

गट नं. १०९९, शिरोळ रोड, ता. शिरोळ, ज़ि. कोल्हापूर. (महाराष्ट्र)

sapna @ 9423263075